बाल कहानियां भाग-१

सतखंडी हवेली का मालिक

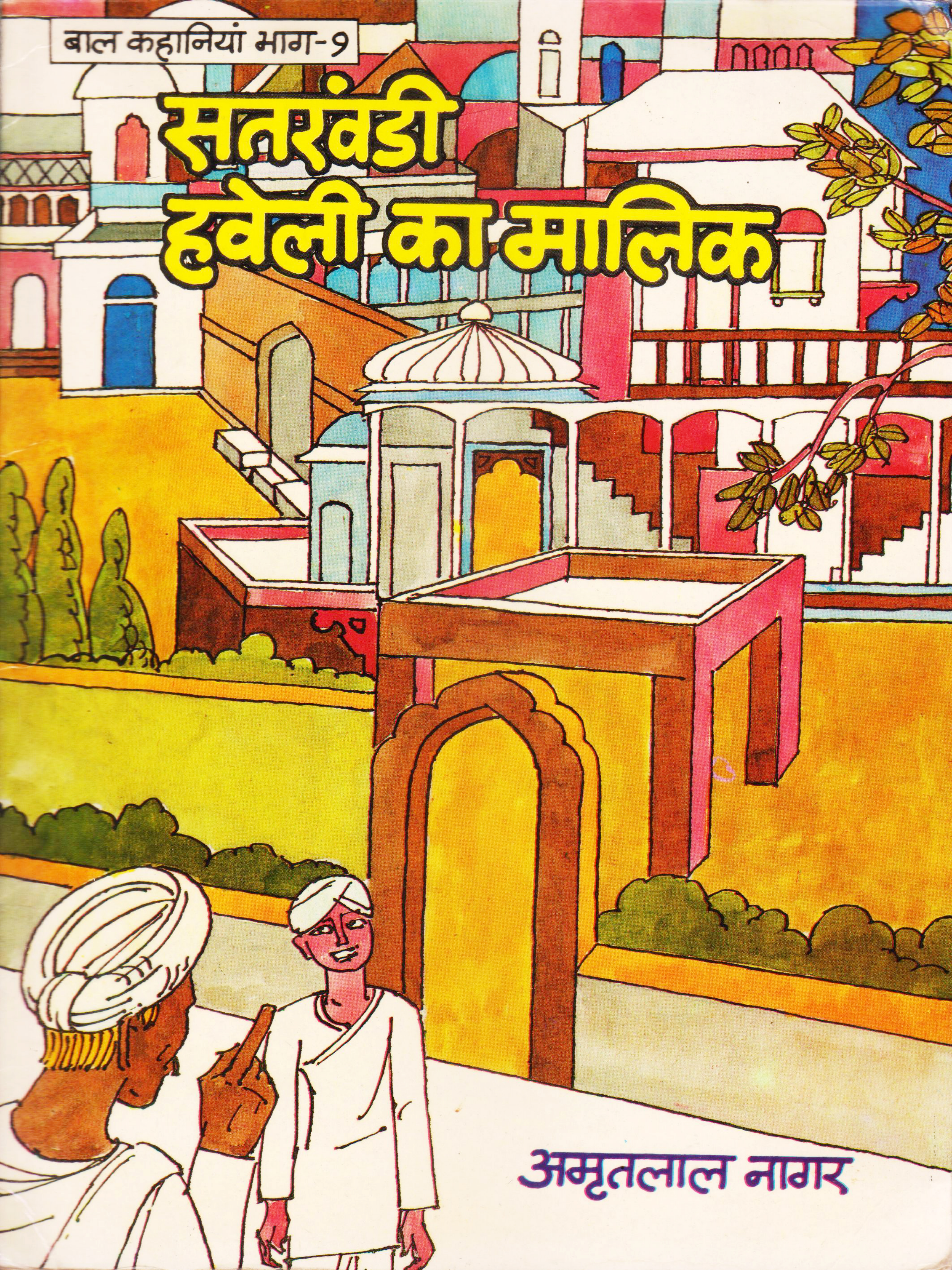

अमृतलाल नागर

बाल कहानियां भाग-9

सतखंडी हवेली का मालिक

अमृतलाल नागर

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

अग्रहायण 1912 (दिसम्बर 1990)

© प्रकाशन विभाग

मूल्य : 11 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- एल.एल.ए. आडीटोरियम, 736, अन्नासलै, मद्रास-600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

विज्युल इण्टरप्राइज़ेज, ई-39, सेक्टर VII, नोएडा द्वारा मुद्रित।

प्रकाशकीय

कहानियां बच्चों को सबसे अधिक आकर्षित करती हैं। यदि उनमें मनोरंजन के साथ-साथ कोई शिक्षा या प्रेरणा भी हो, तो उनकी सार्थकता और भी बढ़ जाती है।

किसी समय कहानियों में उपदेश अधिक हुआ करते थे। आज वह समय नहीं रह गया है। आज के वैज्ञानिक युग में बच्चों को सीधे-सीधे उपदेश पसंद नहीं हैं। विज्ञान और उससे जुड़ी अन्य जानकारियों ने उनके मानसिक स्तर को एक नया धरातल प्रदान किया है। किंतु इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि बच्चों को सद्प्रवृतियों और स्वस्थ जीवन मूल्यों की ओर भी प्रेरित किया जाए। मनोरंजन को शिक्षा और प्रेरणा से जोड़ने का एक उपाय प्रेरक और शिक्षाप्रद कहानियों को रोचक और मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करना भी है। ऐसी कहानियों को बच्चे आसानी से ग्रहण कर सकेंगे और लेखक भी अपने उद्देश्य में सफल होगा।

प्रकाशन विभाग का सदैव यही प्रयास रहा है कि अपने बाल पाठकों को मनोरंजन और शिक्षाप्रद कहानियां उपलब्ध कराई जाएं। इसी क्रम में 'बाल कहानियां' श्रृंखला का प्रकाशन हो रहा है। 'सतखंडी हवेली का मालिक' इसी श्रृंखला की एक और कड़ी है। इसके लेखक हैं श्री अमृतलाल नागर।

आशा है, इन कहानियों से बच्चों का मनोरंजन होगा और साथ ही उन्हें स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा मिलेगी।

डा. श्याम सिंह शशि
निदेशक

विषय-सूची

1. सतखंडी हवेली का मालिक 1

2. भागते भूतों की कहानी 6

3. बलिया के बाबा 10

4. एक पत्ता जो जासूस नहीं था 15

5. गुंडों के बच्चे 18

6. इकलौता लाल 23

7. चुनाव 28

8. अंतरिक्ष-सूट में बंदर 30

सतखंडी हवेली का मालिक

बहुत पुराने समय की बात है। एक नगर में एक बहुत बड़ा जौहरी रहता था। उसका नाम मानिक चंद था।

छप्पन कोटि की सम्पदा, सतखंडी हवेली का मालिक, ऐसे ठाठ से रहता था कि राजा की लक्ष्मी भी उसके वैभव के आगे फीकी पड़ जाती थी, लेकिन समय का फेर, भाग्य का लिखा भला कौन मिटाए। मानिकचंद को व्यापार में ऐसा घाटा हुआ कि देखते ही देखते लाख का घर खाक में मिल गया। बुरे दिन आए तो मानिकचंद की घरवाली भी बीमार पड़ी और प्रभु को प्यारी हो गई। घर में केवल एक सोलह वर्ष का लड़का अमीचंद और मानिकचंद ही बच रहे। एक तो धन जाने का गम, दूसरे पत्नी का वियोग, सेठ मानिकचंद दुख के मारे खाट से लग गए। स्वाभिमानी ऐसे थे कि किसी दोस्त से कानी-कौड़ी भी उधार न ली। रोग में घुलते-घुलते एक दिन मरन किनारे आ लगे। जब अंतकाल आया तो मानिकचंद ने अपने बेटे अमीचंद से कहा, "तुम्हें भगवान के भरोसे सौंपता हूं। एक बात का ध्यान रखना कि इस नगर को छोड़ कर किसी दूसरे नगर में काम शुरू करना। यहां तुम्हें नए सिरे से उठने में बड़ी बाधाएं आएंगी, और यह भी ध्यान रखना कि नौकरी उसी सेठ की करना, जिसकी सतखंडी हवेली हो।"

जब मानिकचंद स्वर्ग सिधार गए तो उनके क्रिया-कर्म से निपट कर अमीचंद ने पिता की आज्ञानुसार अपना नगर छोड़ दिया। कई नगर घूमा, पर उसे कहीं सतखंडी हवेली न दिखाई पड़ी। अमीचंद निराश हो गया। एक दिन एक जौहरी की दुकान के आगे से गुजर रहा था। उसने देखा कि एक व्यापारी जौहरी सेठ को एक अठपहलू कटा हुआ हीरा दिखला रहा है। व्यापारी हीरे की बड़ी-बड़ी तारीफें कर रहा है और जौहरी सेठ भी उससे कह रहे हैं कि "आपका यह हीरा बहुत ही अच्छा है, लेकिन मैं इसके एक लाख रुपये से ज्यादा न दूंगा।"

व्यापारी मुंह बना कर बोला, "सेठजी, इतने नायाब हीरे के केवल एक लाख। मैं नहीं बेचूंगा।" कह कर उसने सेठ के हाथ से हीरा ले लिया।

सेठ ने उसके दाम और बढ़ा दिए। अमीचंद खड़ा था, हाथ जोड़ कर बोला, "महाराज, मैं गरीब आदमी हूं, पर जौहरी का बेटा हूं। आपके इस हीरे को देख कर मेरे मन में भी यह चाव आया है कि इसे एक बार निकट से देखूं। क्या मुझे यह हीरा दिखलाएंगे ?"

व्यापारी ने वह हीरा उसे दिखलाया। पास ही में जल भरा लोटा रखा था। अमीचंद ने हीरा हाथ में लेकर उसे चट से जल भरे लोटे में डाल दिया। व्यापारी घबरा कर "हाय-हाय" करने लगा। अमीचंद बोला, "झूठ-मूठ की हाय-हाय क्यों करते हो ? मिसरी का हीरा बना कर लाये और सेठजी से दो लाख रुपये ठग रहे थे, तुम नीच हो।"

तब जौहरी सेठ भी आश्चर्य से अमीचंद का मुंह देखने लगा। इधर वह मिसरी का हीरा पानी में घुल गया। जाल-साज व्यापारी दुकान से उठ कर भाग गया। जौहरी सेठ ने अमीचंद से कहा, "बेटा, तुमने आज एक ठग से मुझे बचा लिया, क्या मेरे यहां नौकरी करोगे ?"

अमीचंद ने एक बार देखा। सेठ की हवेली पंचखंडी थी, सतखंडी नहीं, फिर भी उसने सोचा कि पिता के आदेशानुसार इतने नगर तो घूम लिए, पर कहीं सतखंडी हवेली नहीं मिली, चलो इसके यहां नौकरी कर लें। सो अमीचंद ने सेठ से हामी भर ली और उनके यहां काम करने लगा।

अमीचंद के मालिक उसके काम से बहुत संतुष्ट थे। रत्नों की परख में वह नवयुवक अपनी पैनी और बारीक दृष्टि से ऐसे कमाल दिखला जाता था कि उसके अनुभवी मालिक को भी कभी-कभी आश्चर्य प्रकट करना पड़ता था। एक बार नगर के व्यापारियों का एक दल विदेशों में यहां का माल बेचने और वहां का खरीदने के लिए जा रहा था। ऐसे व्यापारी दलों को सार्थ कहते थे। इन में बड़े-बड़े अनुभवी मुनीम और कुशल कारिंदे भेजे जाते थे। शिक्षा की दृष्टि से व्यापारियों के नौजवान बेटे भी उनके साथ जाया करते थे। पंचखंडी हवेली वाले जौहरी सेठ के चूंकि कोई बेटा न था और उसके मुनीम, कारिंदों में सबसे छोटा होते हुए भी अमीचंद से चतुर और कोई न था, इसलिए सेठजी ने उसे ही सार्थ में भेजा।

जहाज चला। दस-पन्द्रह दिनों की यात्रा के बाद जहाज एक द्वीप के पास पहुंचा। यहां यात्री कुछ घंटों के लिए ठहरा करते थे। आगे के सफर के लिए यहां जहाज के मटकों में पीने के लिए ताजा पानी भरा जाता था। समुद्र किनारे एक छोटा-सा बाजार था। जिसमें यात्री दिन भर घूमते, आराम करते, खाते-पीते और शाम को अपनी समुद्री यात्रा के लिए फिर चल पड़ते थे। अमीचंद भी

दूसरे यात्रियों के साथ उस द्वीप पर उतरा। दूसरे यात्री तो कई बार यात्रा पर आ चुके थे लेकिन अमीचंद पहली बार आया था। वह बाजार में न ठहरा, बल्कि घूम-घूमकर द्वीप की सैर करने लगा। द्वीप बहुत सुंदर था, पर वहां आबादी अधिक न थी। पच्चीस-पचास बजारिये थे और वह भी कोई बड़े व्यापारी नहीं खाने-पीने का सामान और ऐसी ही कुछ छुट-पुट चीजों का यहां व्यापार करते थे। गाय, ढोर पालने वालों की तो यह हालत थी कि 'ओनामासी घम, बाप पढ़े न हम।'

युवा अमीचंद घूमते-घूमते द्वीप के एक ऐसे हिस्से में गया। जहां अब तक कोई पहुंचा ही नहीं था। वह देख कर दंग रह गया, समुद्र के किनारे अनगढ़ पत्थरों का सा एक पहाड़ खड़ा था, जिस पर काई की पर्त चढ़ गई थी। उस पहाड़ के नीचे जमीन पर अमीचंद की दृष्टि पड़ी तो देखा कि यह तो सीपें हैं। उत्सुकतावश एक सीप खोली छोटे मोतीचूर के लड्डू जैसे बड़े-बड़े मोती देखकर अमीचंद की आंखें फट गईं। पुराने जमाने के भावों को देखते हुए भी एक-एक मोती दस हजार रुपयों से कम न था। अमीचंद ने सीपियों के पहाड़ की ओर दृष्टि डाली तो सोचा कम से कम डेढ़-दो अरब रुपयों की कीमत के मोती यहां लावारिस पड़े हैं। बस उसके मन में चट-पट एक तरकीब सूझ गई, वह जहाज पर आया और उसने कप्तान से कहा, "भाई मुझे तो यह द्वीप बहुत ही पसंद आ गया है और यहां की एक दूध बेचने वाली लड़की से मेरा प्रेम हो गया है इसलिए मैं तो अब फारस देश नहीं जाऊंगा। यहीं पड़ा-पड़ा दूध-दही खाऊंगा और मजे से प्रेम करुंगा। तुम लौटते हुए मुझे अपने साथ ले लेना।"

कप्तान समझाने लगा कि "अरे नादान, जिस मालिक का नमक खाता है, कम से कम उसके कर्तव्य का तो पालन कर।"

अमीचंद बोला, "अरे कप्तान साहब, जवानी चार दिन की है अभी मौज कर लूं फिर बुढ़ापे में कर्तव्य पालन कर लूंगा।"

दूसरे व्यापारियों के मुनीम-कारिंदे उसका मजाक उड़ाने लगे और निंदा भी करने लगे कि पंचखंडी वाले जौहरी सेठ ने ऐसे अनुभवहीन नौकर को भेज कर भयंकर भूल की है।

जहाज पर सेठ के यहां से लाया गया जो थोड़ा-बहुत माल था, वह उसने कप्तान को सम्भलवा दिया और द्वीप में ही रुक गया। उसने दूधवालों से कहा कि अपने गाय, ढोरों का गोबर मुझे बेच दिया करो और ये जो पहाड़ के अनगढ़ पत्थर (सीपें) पड़े हैं, उन्हें गोबर में लपेट-लपेट कर एक-एक कंडा बनाते चलो। मैं तुम्हें मजदूरी के पैसे दूंगा।

दूधवालों और उस द्वीप के बजारियों ने यह समझा कि अमीचंद पागल हो गया है मगर वह किसी ऐसी बात का जवाब नहीं देता था। करते-करते छह महीनों में उसने लाखों कंडे बनवा लिये। जितनी सीपें थी, सब कंडों में छुप गईं। जब दूसरे देशों से जहाज लौटा, सभी बड़े-बड़े और अनोखे माल लेकर देसावर से लौटे थे। सबने कहा कि अमीचंद अब तो चलो कि यहीं दूध वाली से प्रेम करते अपना जन्म बिताओगे।

अमीचंद बोला, "नहीं भाई, अब तो प्रेम करते-करते मेरी जी अघा गया है, इसलिए घर चलूंगा लेकिन कप्तान साहब ये कंडे भी मेरे साथ चलेंगे।"

सब लोग मजाक उड़ाने लगे कि भला ये गोबर के कंडे भी कोई ले जाने की वस्तु है। मगर अमीचंद अड़ गया, उसने कहा कि कंडे जाएंगे, इनका महसूल अलग से दूंगा।

कप्तान ने कहा, "नगद महसूल लूंगा।"

अमीचंद ने नगद भुगतान कर दिया। रास्ते भर दूसरे मालिकों के नौकर यह बतलाते रहे कि हम ये नई चीज लाये हैं या सेठ का माल बेच कर इतना मुनाफा कमा कर लाये हैं। फिर लोग हंसे और बोले कि अमीचंद से सेठ पूछेगा कि तुम क्या लाये ? तो ये कहेगा कंडे लाये हैं। एक दिन मजाक करने के लिए एक सेठ के मुनीम ने कहा, "भाई मुझे रोटी पकानी है, मुझे दो कंडे दे दो।"

अमीचंद बोला, "दे दूंगा, मगर पहले तुम यह रसीद लिख दो कि मैंने पच्चीस-पच्चीस हजार के दो कंडे अमीचंद से लिए हैं, उनके दाम मेरे सेठ से वसूल कर लिए जाएं।"

यह सुन कर जहाज भर के लोग हंस पड़े, "अमीचंद जरूर पागल हो गया है, जो कि कानी कौड़ी मोल बिकने वाले कंडों के पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये मांग रहा है।"

किसी ने हंस कर कहा कि लिख दो भाई, लिख दो, अमीचंद के पागलपन का एक लिखित सबूत भी नगरवालों के सामने आ जाएगा।

जहाज नगर के बंदरगाह पर पहुंचा। सबने अपने-अपने सेठों को कहलाया कि माल ले जाने के लिए एक या दो छकड़े भेज दो। लेकिन अमीचंद ने चार छकड़े मंगवाए। उस समय का यह कायदा था कि विदेशों से आए माल को छकड़ों पर सजा-सजाकर उनका जुलूस बाजार से निकाला जाता था। उसे देखने के लिए नगर भर की भीड़ इकट्ठा हुआ करती थी। यह दो खंडों वाले व्यापारियों के द्वारा लाया गया माल है, यह तीन खंड, चार खंड वाली हवेलियों के व्यापारियों का माल है। सोना, चांदी तरह-तरह के सामान छकड़ों पर लदे हैं,और लोग उन्हें देखकर 'वाह-वाह' कर रहे हैं। अंत में नगर की सबसे बड़ी पंचखंडी हवेली के छकड़े जुलूस से गुजरे। छकड़े तो चार थे, मगर सब पर कंडे लदे हुए। शहर भर में पंचखंडी हवेली के सेठ की हंसी उड़ायी जाने लगी। शहर भर में अमीचंद की मूर्खता और लापरवाही के किस्से फैलने लगे। सेठ ने भी सुना और वह बहुत क्रोधित हुआ। छकड़े पंचखंडी हवेली के द्वार पर पहुंचे। अमीचंद ने जाकर सेठ के पैर छुए और कहा, "माल लाया हूं एक बार देख लीजिए।"

सेठजी गुस्सा हो गए। उन्होंने अमीचंद के गाल पर एक तमाचा मारा और कहा, "नालायक तूने मेरी इज्जत ले ली। मैंने तुम्हें चतुर समझ कर भेजा था, पर तूने तो मेरी जग हंसाई करा दी।"

अमीचंद हाथ जोड़ कर बोला, "अब जो हुआ सो हुआ पर आप फलाने सेठ के यहां से ये पावती पर्ची भेज कर पचास हजार रुपये मंगा लीजिये।" सेठ बोले, "किस बात के मंगवा लूं?" अमीचंद बोला, "उसने दो कंडे मुझसे खरीदे थे, सो उससे यह रसीद लिखवायी थी। आप पचास हजार रुपये मंगाएं तो अभी आपकी बदनामी, नेकनामी में बदल जाएगी।"

पहले तो सेठजी बहुत क्रोधित हुए पर सेठानी अधिक समझदार थी, वह छहखंड की हवेली के मालिक की बेटी थी। सेठानी ने अपने पति से कहा, "पहले इन कंडों को समझ तो लीजिये, तब नाराज होइए।" सेठानी ने अमीचंद से कहा, "हां बेटा, अब बतलाओ कि इन कंडों में क्या खास बात है?"

तब अमीचंद ने कहा, "हां, माताजी, अब आपने हमसे कायदे की बात पूछी है। यह देखिये, एक-एक कंडे में एक-एक मोती दबा हुआ है।"

मोती देख कर सेठजी की आंखें चौधिया गईं। उन्होंने लपककर अमीचंद को कलेजे से लगा लिया और कहा, कि "बेटा, मुझे क्षमा कर दे, मैं तेरी चतुराई को पहचान नहीं पाया। तू तो इन मोतियों से भी अधिक मूल्यवान है।"

अमीचंद बोला, "मैं अब आपके यहां नहीं रहूंगा। पिताजी ने सच कहा था कि सतखंडी हवेली वाले के यहां नौकरी करना। जिस व्यापारी की जितनी ऊंची बुद्धि होती है, उतना ही उसका बाहरी वैभव भी ऊंचाइयों पर नजर आता है। आप पंचखंडी के मालिक हैं, इसलिए मेरे कंडे लाने का मतलब न समझ कर गुस्सा हुए। माताजी छहखंडीवाले की बेटी हैं, इसलिए उन्होंने आपसे यह कहा कि पहले कंडों की खासियत पूछो। अगर मैं ये कंडे बना कर न लाता तो ये शहर के सारे व्यापारी मुझे लूट लेते। मेरे पिताजी सतखंडी हवेली वाले थे। मुझे यह चतुराई उन्होंने ही सिखलायी थी। अब मैं जाता हूं।"

सेठ-सेठानी अमीचंद के पैरों पड़ गए, कहा कि हमारी इकलौती बेटी से विवाह करके तुम हमारे जमाई बनो। अमीचंद बोला, "जमाई तब बनूंगा जब आप वह द्वीप खरीद लेंगे, जिससे और कोई उस द्वीप के मोतियों का मालिक न बन सके।"

सेठजी ने तुरंत राजा से वह द्वीप खरीदा, अपनी लड़की का विवाह अमीचंद से किया और सारे शहर में उसकी बुद्धि के दमदमे बजने लगे। राम करे जैसे उसके सुख-सौभाग्य के दिन लौटे, वैसे सब के दिन अच्छे फिरें।

भागते भूतों की कहानी

एक राजा था। बड़ा ही प्रजापालक, दानी और न्यायप्रिय। उसको नई-नई इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। एक बार राजा ने अपने लिए अनोखा महल बनवाने का विचार किया। एक बड़ा-सा तालाब खुदवा कर बीच में संगमरमर का महल बनवाया, तालाब में लबालब पानी भरा था। घाट भी बड़े सुंदर थे जिनके चारों तरफ संगमरमर की बुर्जियां शोभायमान थीं।

उस राजा के राज्य में जो भी परदेसी आता तो राजा उससे यही पूछता कि क्या तुम्हारे राज्य में ऐसा महल है ? और जब लोग कहते कि नहीं महाराज ऐसा सुंदर महल तो हमने आज तक कहीं देखा ही नहीं, तब राजा बहुत खुश हो जाता। जब चारों तरफ नए महल की धूम मच गई तो राजा ने कहा कि अब पंडितों से मुहूर्त सुझवा कर शुभ शकुन-साइत में नए महल में रहा जाए। सो राजा ने मुहूर्त सुझवाया। बड़े-बड़े पंडित बुलवाए गए, यज्ञ हुआ, पूजा-पाठ हुआ, दीन-दुखियों को भर पेट भोजन दिया गया और चारों ओर राजा की जय-जयकार होने लगी। राजा ने आदेश दिया कि जैसा सुंदर मेरा महल है वैसा ही उसे सजाना भी चाहिए। हुक्म की देर थी कि ईरान के गलीचे, चीन के नक्काशीदार बर्तन और विलायत के कीमती से कीमती झाड़-फानूस मंगाए गए। यह सब सामान नए महल में अच्छी तरह से सजा दिया गया। सजावट देख कर सब यही कहते कि अब तो राजा इन्द्र का महल भी इसके आगे फीका लगेगा।

संयोग की बात कि उसी रात कैलास पर्वत से भागी हुई भूतों की एक टोली महल के ऊपर से गुजरी। भूतों के मुखिया ने इतना सुंदर महल देखा और वह भी सुनसान तो बहुत खुश हुआ। भूतों को सन्नाटे की जगह बहुत पसंद आती है, इसलिए मुखिया के हुक्म से वे सब वहीं उतर पड़े। अच्छी जगह बहुमूल्य सजावट और खाने-पीने का बहुत बड़ा भंडार देखकर भूतों को बड़ा आनंद आया। रात भर धमा-चौकड़ी मारते रहे। सबेरे सूरज निकलते ही भूतों की ताकत कम हो जाती है। इसलिए वे कोने में निर्बल और निस्तेज होकर दिनभर छिपे पड़े रहे। संयोग की बात कि उसी दिन सबेरे राजा अपनी रानियों और राजकुमारों के साथ उस महल में रहने के लिए आए। बड़ी धूम-धाम हुई। दिन भर गाना-बजाना, खाना-पीना आदि राग-रंग चलते रहे। भूतों को बहुत क्रोध आया कि राजा ने हमारी जगह छीन ली है मगर दिन में वह बोल नहीं सकते थे। जब रात हुई, राजा-रानियां, नौकर और बांदियां जब सब सो गए तब भूत-मंडली एक जगह जमा हो गई और यह विचार होने लगा कि अब कहां चला जाए। भूतों का मुखिया अपनी नकसुरी आवाज में बोला, "हम कहीं नहीं जाएंगें। यह महल तालाब के बीच में है इसलिए जो हमें कैलास पर्वत से पकड़ने आएंगे उन्हें यहां का पता नहीं चलेगा। ऐसा करो कि राजा-रानी, नौकर-बांदी सबको पलंग समेत उठाकर तालाब में फेंक दो। हम ही यहां रहेंगे।"

भूतों के इस निश्चय से महल में हा-हाकार मच गया। राजा-रानियों समेत डेढ़-दो सौ लोगों को सोते समय ही पानी में फेंक दिया। बड़ा शोर-शराबा हुआ, मशालें जलीं, बचाओ-बचाओ की आवाजें चारों तरफ से सुनाई देने लगीं। राम-राम करके किसी तरह राजा, रानी और सब लोग बचाए गए। सब लोग भाग कर फिर अपने पुराने महलों में लौट आए। कई रानियों को डर और ठंडे पानी के कारण बुखार चढ़ गया। राजा भी बहुत परेशान कि यह कौन-सी आफत आ गई। उसने लाखों रुपया खर्च करके इतना सुंदर महल बनवाया पर वहां रह न सका इसका कारण क्या है ? बड़े-बड़े पंडित आए, ज्योतिषी आए, बाबा-बैरागी आए, सबने विचार किया फिर एक साधु बोला कि यह शिवजी के भूतों की भागी हुई मंडली है इसको कोई नहीं निकाल सकेगा। पर दक्षिणा के लालच में कुछ पंडितों ने कहा कि हम अपनी मंत्र-तंत्र की शक्तियों से भूतों को भगा देंगे। पंडितों के कहे मुताबिक पूजा-पाठ के लिए ढेर सारी सामग्री मंगाई गई, पंडित लोग महल में गये,पूजा की और महल के चारों ओर अभिमंत्रित कीलें गाड़ी फिर कहा कि "अब यहां भूत तो भूत स्वयं यहां भूतनाथ भी आने की हिम्मत न करेंगे। राजा से कहो कि अपने महल में आकर सोएं।" परंतु मंत्री ने कहा, "अभी मैं राजपरिवार को यहां लाने का जोखिम नहीं उठाऊंगा। पहले दो-चार दिन तुम्हीं लोग रह कर बताओ कि सब ठीक-ठाक है तब हम राजा को बुलाएंगे।"

परंतु पंडितों की पूजा-पाठ बिल्कुल निकम्मी साबित हुई, रात के समय जब भूतों में जोर आया तो उन्होंने उन सब पंडितों को भी उठा-उठा कर फेंकना शुरू कर दिया। किसी पंडित की चोटी पकड़ कर उसे उड़ाते हुए आकाश में ले गए और वहीं से धम्म से धरती पर पटक दिया। कोई पंडित दलदल में गिरा, किसी की हड्डी-पसली टूटी, सभी हाय-हाय करते वहां से भागे।

पंडितों की पराजय से राजा बहुत दुखी हुआ। उसने चारों ओर ढिंढोरा पिटवाया कि जो मेरे महल से भूतों को निकाल देगा उसे पचास लाख रुपये इनाम में दूंगा। रुपयों के लालच में इस बार बड़े-बड़े मौलवी, मुल्ले, ओझे-सयाने आए मगर उनकी भी भूतों ने बुरी दुर्गत कर डाली। वे भी भाग गए। अब राजा बहुत दुखी हुआ। उसे इस बात का बहुत दुख था कि ऐसे सुंदर और बहुमूल्य महल में वह रह नहीं सकता। राजा को समझाते हुए मंत्री ने कहा, "सरकार अब उस धन को कृष्णार्पण कर दीजिए और भूल जाइए।" परंतु राजा भी जिद पर चढ़ गया था।उसने कहा, "यह नहीं होगा। मंत्री तुम देश-देश में ढिंढोरा पिटवा दो कि जो व्यक्ति इस महल से भूतों को निकाल देगा उससे राजा अपनी राजकुमारी का विवाह कर आधा राज-पाट सौंप देंगे।"

ढिंढोरा पिटा, "खल्क खुदा का मुलक हिन्दुस्तान का, हुक्म राजा बहादुर का कि जो कोई भूतों को निकाल देगा वह राजकुमारी का पति बन जाएगा।" मगर कोई न आया, चारों तरफ यह खबर फैल गई थी कि शिवजी के भूत हैं उनको कोई निकाल नहीं सकता, जिसको जान देनी हो वही जाए। महीनों बीत गए कोई न आया। बेचारा राजा बहुत उदास रहता मगर वह क्या कर सकता था।

संयोग की बात कि उसी राजा के राज में एक बूढ़े मुंशीजी रहते थे, बेचारे मर गए। उनकी एक बुढ़ापे की औलाद थी और बूढ़ी विधवा पत्नी। बेचारे गरीबी की मार से दुखी होकर अपना जीवन जैसे-तैसे काट रहे थे। लड़का नौकरी की तलाश में रोज राजा के दरबार में जाता पर वहां उसे कोई काम-धाम नहीं मिला। बेचारे मां-बेटे भूख से बिलबिलाने लगे। एक दिन बीता, दो दिन बीते, जब तीसरा दिन हुआ तो मुंशीजी के बेटे ने यह सोचा कि भूतों के महल में चला जाए। या तो वह उन्हें निकाल देगा या फिर भूत ही उसे मार डालेंगे। सोचते-सोचते एक तरकीब उसके दिमाग में आई। झट-पट उठा, अपने स्वर्गीय पिता का कलमदान लिया, एक बही उठाई, एक टाट का बोरा और पैना चाकू भी सम्भाल कर टेंट में रखा फिर लालटेन लेकर मां से बोला, "मां-मां मैं बाहर काम पर जा रहा हूं, जो लौट कर न आऊं तो राजा के यहां से पूछ लेना कि मेरा बेटा कहां गया है तुम्हें पता लग जाएगा।" बेचारी बुढ़िया यह समझ ही न पायी कि बेटा कहां जा रहा है और बेटा भूतों के महल में पहुंच गया।

महल के तालाब के बाहर शानदार फाटक था, वहां सिपाही पहरा दे रहे थे। मुंशीजी के बेटे ने सिपाहियों से कहा, "फाटक खोल दो मैं भूतों से लड़ने के लिए आया हूं।"

सिपाही हंस पड़े, कहा— "जा-जा, पिद्दी जैसा लड़का शिवजी के भूतों से लड़ेगा। बड़े-बड़े पंडित, मौलवी, ओझे-सयाने तो अपने कान पकड़ कर भाग गए। अब क्या तू अपनी जान देने आया है ?" लड़का बोला कि "तुम लोग अगर फाटक न खोलेगे तो मैं राजा से जाकर शिकायत करुंगा।" सिपाही ने झुंझला कर फाटक खोल दिया और कहा, "ले-जा-मर।" तालाब के किनारे एक डोंगी बंधी थी, उसी में अपनी सब चीजें रख कर महल की ओर डोंगी खेने लगा। महल में

भूत कांव-कांव, झांव-झांव करते हुए बड़ा शोर मचा रहे थे। सुन कर वह लड़का डरा नहीं बल्कि गरज कर बोला, "ठहरो मूर्खों शिवजी को तुम्हारे यहां रहने का पता चल गया है और मैं तुम्हारी खबर लेने के लिए ही यहां आया हूं।"

लड़के की यह बात सुन कर महल में सन्नाटा छा गया। लड़का डोंगी से उतर कर अपना टाट का बोरा, लालटेन, बस्ता, बही और कलमदान लेकर घाट की सीढ़ियां चढ़ने लगा। और ऊपर जाकर फिर जोर से बोला, "मैं महादेवजी के हुक्म से आया हूं, उनके जितने भूत भागे हैं वे सब मेरे सामने आएं और अपना-अपना नाम लिखाएं। अगर नहीं लिखाएंगे तो आधे पहर में बीरभद्र की टोली आकर सब भूतों को आसमान में ही जला डालेगी।" भूतों में खलबली मच गई, सब एक-दूसरे के चेहरे देखने लगे। मुंशीजी के बेटे ने फिर ललकारा, कहा "जो मेरे पास आकर अपना नाम नहीं लिखाएगा उसको सजा दी जाएगी। ऊँ नमः शिवाय।"

भूत बेचारे डरते-कांपते आए। लड़का सबके नाम पूछता बही में लिखता और फिर चाकू निकाल कर कहता कि बैठो तुम्हारी नाक काटेंगे। भूत डर कर गिड़गिड़ाने लगे। लड़के ने कहा, "शिवजी की आज्ञा से तुम्हें सजा तो अवश्य ही दी जाएगी चाहे नाक कटवाओ या आग में जलो।" हार कर भूतों का मुखिया बोला, "आप हमारी नाक ही काट लें मगर जीने दें।" लड़का बोला, "ठीक है नाक ही कटवाओ और राजा का राज छोड़ कर पांच सौ कोस दूर भाग जाओ। और अगर लौट कर फिर आए तो इन्हीं कटी हुई नाकों से हवन करके तुम्हें जलाया जाएगा।" भूत बहुत डर गए थे, इसलिए आ-आकर लड़के की बही में अपना नाम लिखवाते, नाक कटवाते और भाग जाते थे। मुंशीजी के बेटे ने सब नाकें बोरे में भरीं और उसे सिया और फिर बही का तकिया बना कर उसी नाकों भरे बोरे पर सो गया। नकटे भूत भाग गए और मुंशीजी का लड़का चैन से खर्राटे भरने लगा।

सबेरे सिपाही आए कि महल से लड़के की लाश निकालें और राजा को जाकर खबर करें। पर लड़का तो नाकों के बोरे पर सोता हुआ खर्राटे भर रहा था। सिपाहियों ने उसे जगााया और पूछा कि "भूतों ने तुम्हें मारा क्यों नहीं ?" लड़का हंसकर बोला, "भूत अब यहां हैं ही कहां जो मुझे मारते। भूत तो मेरे बोरे में बंद हैं। जाओ राजा को जाकर खबर करो कि यहां आकर रहें और राजकुमारी से मेरा ब्याह करें।" ऐसा ही हुआ राजा ने राजकुमारी का ब्याह उस लड़के से कर दिया और कहा, "इस नए महल में अब तुम्ही रहो और राज-पाट करो। मगर इतना जरूर बतला दो कि तुमने किस मंत्र से उन भूतों पर विजय पाई !" लड़के ने हंसकर कहा, "महाराज मैं कायस्थ का बेटा हूं, बुद्धि से काम लेता हूं इसलिए बुद्धुओं से जीत गया।" सुनकर राजा-रानी बड़े खुश हुए, लड़के की मां को भी महल में बुला लिया गया। जैसे उनके सुख के दिन लौटे, वैसे राम करे सबके दिन बहुरें।

बलिया के बाबा

बाबू बनारसीदास को अपना पूरा नाम केवल पहली तारीख को वेतन के रजिस्टर पर दस्तखत करते समय ही याद आता था, वरना दफ्तर में, मुहल्ले में, पास-पड़ोस में सभी उन्हें बाबा कहते थे और वह खुद भी अपने आपको जगत बाबा समझते थे। सिर और दाढ़ी-मूंछों के बाल लगभग रुपये में अट्ठानवे पैसे सफेद हो गए थे। शाम को दफ्तर से घर लौटते तो मौसम की

कोई न कोई चीज उनके झोले में अवश्य होती थी। कभी बूट, कभी मूंगफली, कभी बेर, मकोय या ककड़ी, खीरे कुछ भी ले आते, क्योंकि मुहल्ले-भर के बच्चे उनके घर पहुंचते तो सबसे पहले उनका झोला ही टटोलते थे।

"हां-हां, अभी नहीं- अभी नहीं, पहले बाबा की सेवा करो, फिर मिलेगी।"

एक लम्बी-सी पतली कोठरी का घर, जिसके पीछे आधी ईंटें, आधे में परदे की ओट लगा कर उन्होंने अपना नित्यकर्म का स्थान बना रखा था। वहीं निपटे, नहाये, कभी खिचड़ी डाल दी, कभी बेसन या आटा घोलकर लपसी-सी पका ली और नमक-काली मिर्च डालकर प्रेम से सपड़-सपड़ खा गए। किसी बच्चे के यहां कभी कोई अच्छी चीज बनी तो वह भी आ जाती थी, फिर मजे से चबूतरे पर बैठकर बच्चों को कहानियां, इधर-उधर की बातें सुनाते थे।

उस दिन जब शाम को घर पहुंचे तो उनका एक 'पोता' अरुण जो अब पत्रकार हो गया है, उनके पास पहुंचा और बोला, "बाबा पौने पांच बजे हैं, मेरी घड़ी देख लीजिए और ठीक सवा पांच बजे... समझ गए न ? ठीक सवा पांच बजे... मेरे दफ्तर का फोटोग्राफर यहां आ जाएगा। क्या समझे ?"

"समझ गया। बाकी, किस खुशी में मेरी फोटो खिंचेगी बेटा, जरा यह तो बता जाओ।"

"यह सब उसी समय बतलाऊंगा।" फिर बाबा की कोठरी साफ करते और चूल्हा जलाते हुए बच्चों से कहा, "तुम सब लोग भी समय से तैयार हो जाना। जरा बाबा की दाढ़ी-मूंछों पर कंघावंघा कर देना भैया। हमारे बाबा को 'राजा बेटा' बना कर बैठाना, उनके साथ तुम लोगों की भी फोटो खिंचेगी।"

बाबा को 'राजा बेटा' बनाने की बात सब बच्चों को आनंदित कर गई। मिनट-मिनट पर "किता बजा, किता बजा" पूछते और कोठरी आदि साफ करते हुए लड़कों ने सचमुच ठीक सवा पांच बजे तक बाबा को 'राजा बेटा' बना कर चबूतरे पर बैठा दिया। किसी ने उनकी दाढ़ी में कंघी की, किसी ने उनके बड़े-बड़े सफेद बाल ठीक किए। लल्लू अपने घर से अपने पापा का थोड़ा-सा पाउडर ले आया, वह भी बाबा के मुंह पर मला गया। यों ही हंसते-हंसते बाबा-पोतों में छेड़छाड़ होते-होते 'धूमधाम' अखबार का फोटोग्राफर आ गया। लड़कों के साथ बाबा की फोटो खिंची, उसमें अरुण भी बैठ गया। जब यह सब काम पूरा हो गया और फोटोग्राफर भी चला गया, तो अरुण ने कहा, "बाबा इस साल कांग्रेस के सौ साल पूरे होने वाले हैं, जरा अपनी सन् 42 वाली वह बातें बतलाइए जो एक बार आपने हम लोगों को, जब हम छोटे-छोटे थे, सुनाई थीं।"

"अच्छा तो यह बात है। अब समझ में आई,पर भैया पहले हम कुछ खिचड़ी-उचड़ी बनाएं, अपने पेट में डाल लें तब सुनावेंगे।"

"वह सब कुछ नहीं, आप सुनाना शुरू कीजिए अभी लल्ली आती है, वह आपकी खिचड़ी बना देगी।बस बैठ जाइए, अब मैं टेप रिकार्डर खोलता हूं– वन, टू, थ्री– स्टार्ट।"

बाबा खिलखिलाकर हंस पड़े बोले, "वाह! ऐसे रोब से 'स्टार्ट' कहा है तुमने, जैसे पुलिस कप्तान ने गोलियां चलाने का आर्डर देते हुए कहा था, "फायर"।

"ये देखो, हमारे कंधे पर आज तक गोली का निशान बना हुआ है, आर-पार निकल गई थी ससुरी हंडिया भर खून बहा था। ये तो कहो, बुलाकी बच्चा कंपाउडर थे, उन्होंने हमको मलहम-

पट्टी करके जिलाय लिया, नहीं तो ये सब बातें सुनाने के लिए हम जिंदा न बैठे होते।"

"शुरू से सुनाइये बाबा। नौ अगस्त के दिन बंबई में 'करो या मरो' कहते हुए गांधीजी और सब नेता लोग पकड़े गए थे, उस दिन आपके बलिया में क्या हुआ था ?"

"अरे हमारे यहां भी बड़ी सनसनी मची थी बेटा— सवेरे आंख खुली तो सूरज परसाद ने आकर बताया कि जिला कांग्रेस अध्यक्ष चित्तू पांडे, इस्टूडेंटों के लीडर तारकेसर पांडे, ठाकुर जगन्नाथसिंह, युसूफ कुरैशी, शिवपूजन सिंह वगैरे-वगैरे सब बड़े-बड़े लोग सवेरे चार बजे ही गिरफ्तार कर लिए गए। हमने सूरज से कहा भैया कुछ बात जरूर है,तभी ये सब पकड़े गए हैं। मगर बात क्या है ये समझ नहीं आती।"

तब तक लल्ली लोटे में चाय और पीने के लिए एक कटोरी लेकर आ पहुंची और कहा, "लो बाबा चाय पियो, इतने मैं तुम्हारी खिचड़ी बना के लाती हूं।"

"अरे, तो लोटा भर चाय पिलाएगी मुंडो। खिचड़ी फिर किस पेट में खाऊंगा ?"

अरुण बोला, "लल्ली, भीतर से कोई गिलास हो तो ले आ, आधी चाय मैं पी लूंगा। हां बाबा, तो फिर क्या हुआ ?"

"फिर ये हुआ कि हम और सूरज परसाद दोनों इधर-उधर टोह लेने निकले। शहर की रंगत देखी, मगर सबके चेहरों पर साढ़े छह बजे थे। किसी की भी यह समझ में नहीं आता था कि ये सब लोग क्यों पकड़े गए और शहर में जगह-जगह इतनी पुलिस क्यों खड़ी कर दी गई है कुछ पता न चला।"

"क्यों, रेडियो में खबर नहीं आयी थी ?"

"उस बखत आज की तरह रेडियो-फेडियो इतने थोड़े ही थे जो खबर लगती। हमारे सहर-भर में उस बखत शायद एक-आद जगह ही रेडियो था, सो भी बड़े आदमियों के यहां। टोह लगाते-लगाते बड़ी मुश्किल से पता लगा कि आज बंबई में महात्माजी और जवाहरलालजी और पटेल, आजाद-सब बड़े-बड़े नेता पकड़ लिए गए हैं। उन्हें कहां ले जाया गया है यह भी किसी को नहीं मालूम। बस, गांधीजी एक हुक्म दे गए हैं—'डू और डाई'। अब तुम लोग यह जान लो कि उस समय हम लोगों की उम्र पंद्रह-पंद्रह बरस की थी। सूरज हमसे कहे कि बनारसी, क्या करें ? ये लाल मुंह वाले हमारे नेताओं को पकड़ कर जाने कहां ले गए हैं। मेरी समझ में तो सब नेताओं को इन्होंने गोली से उड़वा दिया है। हम भी इनमें से एक-एक को भून डालेंगे।

"मैंने कहा— गुस्सा तो हमको भी बहुत आ रहा है मगर देखो सूरज, बिना बड़ों से पूछे कोई काम नहीं करना चाहिए।

"सूरज परसाद बोला— ठीक कहते हो। मैं सब पूछताछ कर के आता हूं। तुम इस बीच में यहां के लोगों को गांधीजी की बात बतलाते रहो- डू और डाई! करो या मरो !

"रात में सूरज परसाद हाथ में लालटेन लेकर बचे-खुचे सब नेताओं को यह खबर कर आए कि गांधीजी करो या मरो कह कर कहां चले गए, इसका पता नहीं। अब हम लोग क्या करें ?

"एक बुजुर्ग बोले कि भाई, तुम एक बार सब नेताओं को कह आओ कि सवेरे अखबार पढ़ते ही सब लोग शहर में आम हड़ताल करा देंगे और इसके लिए कोई मीटिंग-वीटिंग करने का समय अब नहीं है।

"हड़ताल हुई और ऐसी जोरदार हुई कि एक भी दुकान नहीं खुली थी। उन दिनों हमारे शहर के डिक्टेटर श्री उमाशंकर थे। उन्होंने हम लड़कों से कहा— भोंपा बजाओ और गांधीजी की जय-जयकार करना शुरू करो। बस भैया, सब लोगों ने 'इंकलाब जिंदाबाद' मचा दिया। चारों ओर सनसनी फैल गई।

"दूसरे ही दिन से बलिया और आस-पास के गांवों में ऐसी जबरदस्त आग लगी कि तुम लोग यह समझ लो, बलिया का बच्चा-बच्चा अर्जुन के गाण्डीव धनुष की टंकार-सा बन गया... पर हमारा दोस्त, बेचारा, सूरज परसाद पुलिस की पकड़ में आ गया। पुलिस ने उसे ऐसा मारा, ऐसा मारा कि बेचारे की जान ही ले ली। हमें अभी तक अपने मित्र की बड़ी याद आती है।" कहते-कहते बाबा की आंखें भर आईं।

सब बच्चों का दिल भी दुख और क्रोध से भर उठा। मिनट भर बाद ही आंखें पोंछ कर बाबा फिर सुनाने लगे, "बस भैया, फिर तो तुम यह जान लो कि जवानों के दिलों में ऐसा जोश जागा, ऐसा जोश जागा कि किसी के थामे न थमा। पुलिस हैरान। बड़े-बड़े अंग्रेज हाकिम और उनके पिट्ठू हिंदुस्तानी अफसर हैरान। रेलवे स्टेशन जलाए गए, डाकखाने जलाए गए, सारे तार काट डाले गए कि हाकिम कहीं टेलीफोन, टेलीग्राम न कर सकें। जगह-जगह पुलिस और लड़कों में मुठभेड़ें होने लगीं। पुलिसवालों को नाकों चने चबवा दिये बेटा। इस बार लड़के भी ऐसे चंट हो गए थे और आड़ ले-लेकर ऐसी मार मारते थे कि पुलिसवाले घबरा गए। जज साहब को औरतों ने चूड़ियां भेंट की। हाकिम, परगना ऐसे घबराए कि अपनी कुर्सी छोड़-छाड़ कर भाग गए। बिलथरा रोड में एक रेलगाड़ी पर कब्जा कर लिया और उसे 'आजाद हिंद रेल' नाम देकर स्टेशन-स्टेशन 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाते हुए ले गए। उस रेल पर जोशीले जवान जाते और सरकारी माल-गोदामों, डाकखानों, दफ्तरों पर कब्जा करके कहते कि अब हम आजाद हो गए हैं। अब पंचायती हुकूमत चलेगी।"

लल्लू बोला, "यानी सन् 47 से पहले ही बलिया ने आजादी देख ली ?"

"अरे बेटा, खाली बलिया ही नहीं, ऐसी सैकड़ों जगहें थीं जहां से अंग्रेज सरकार को एकदम उखाड़ डाला गया था। निगम साहब जैसे बड़े-बड़े आई.सी.एस. अफसर, कलक्टर, बड़े-बड़े कप्तान-दरोगा थानेदार हम लोगों से थर्रा गए थे। कई जगहों पर ये दुष्ट.लोग हम लोगों से बदला भी लेते थे। बांसडीह में हमारे नेताओं ने काजिम हुसैन थानेदार से कहा कि थाना हमारे हवाले कर दो। काजिम हुसैन बेचारा दो चक्की के पाटों के बीच में दबने लगा। थाने के बहुत-से हथियार

हमने अपने कब्जे में कर लिए थे। नेता थानेदार से कहने लगे कि चलो हमारे साथ रेल की पटरियां उखाड़ो। वह बेचारा कैसे राजी हो। उसको गांधी टोपी दी गई, उसने तुरंत पहन ली। कहा— तिरंगे को सलाम करो, बेचारा झुक-झुककर सलाम करने लगा। लड़कों में यह ललक थी कि थाने के ऊपर तिरंगा झंडा फहराया जाए, मगर काजिम हुसैन इसके लिए राजी न हुआ। वह चालाकी से अपने साथियों को लेकर थाने की छत पर जा चढ़ा। संयोग से दो-चार बंदूकें भी उसके आदमियों के पास थी। काजिम हुसैन अब अकड़ कर कहने लगा कि जो झंडा लगाने आएगा उसको गोली मार दी जाएगी।

"उसका यह कहना था कि लड़कों में जोश चढ़ आया। लोग ऊपर चढ़ने की कोशिश करते और थानेदार गोलियां चलाता। लगभग 20 लोग मरे और 100-200 घायल हुए। इन घायलों में मैं भी एक था। मगर हममें से एक ऐसा भी था जिसने हार न मानी। उसका नाम कौशल कुमार था। वह बहादुर जवान अपनी जान हथेली पर रख कर पीछे से किसी तरह छत पर चढ़ ही गया। पुलिस देखती ही रह गई। वह एक बार तो झंडा फहराते हुए छत पर खड़ा हो ही गया भैया, और जोर से 'महात्मा गांधी की जय' चिल्लाया। जय मुंह से पूरी निकल भी न पायी थी कि काजिम हुसैन की गोली उसकी पीठ पर लगी और वह झंडा लिए-लिए छत की मुंडेर से उल्टा ही नीचे गिरा, कौशल को तो बहुत से लोगों ने हाथों-हाथ झेल लिया, मगर कौशल बेचारा तब तक अमर शहीद हो चुका था। लोगों ने उसके हाथ के झंडे को भी धरती न छूने दी, बीच ही में उठा लिया... और फिर तो लोगों में ऐसा जोश चढ़ा, ऐसा जोश चढ़ा कि थाने पर कब्जा करके ही माने।

"भीड़ ने दीवाने-जोश में थाने की छत पर चढ़ कर गोली चलाते थानेदार और सिपाहियों को पकड़ कर उनकी बंदूकें छीन लीं और ऐसा मारा, ऐसा मारा, ऐसा मारा कि उनमें से अगर कोई आज जिंदा भी होगा तो अपनी पीठ सीधी नहीं कर सकता होगा। तुमने भले ही घर बैठे आजादी पा ली हो, पर हमने अपना खून बहा कर आजादी कमायी थी और यह भी याद रखो कि जो नेता-पनेता आज पब्लिक को लूट-लूट के अपनी तोंदे बढ़ा रहे हैं, उनकी भी एक दिन यही हालत होगी और हमारे ये बच्चे जवान होकर उनको भी नहीं छोड़ेंगे। उनके पापों का घड़ा एक दिन फूट कर ही रहेगा।"

पौने उन्सठ बरस के जगत बाबा जब खुद ही इतने जोश में आ गए थे, तो उनकी वानर सेना का हाल भला क्या कहा जाए! एक क्षण रुक बाबा ने फिर कहा, "लड़को, बाबा तो सदा नहीं रहेंगे, पर बाबा की यह बात सदा याद रखना कि जुल्म और अन्याय से लड़ने का नाम ही जवानी है।"

एक पत्ता जो जासूस नहीं था

एक मारे गए शिकार के फेर में दो चीलें आपस में गुत्थम-गुत्था होकर एक ढाक के पेड़ पर गिरीं और क्षण-भर में ही फिर लड़ने लगीं। उनकी लड़ाई में ढाक के कई पत्ते टूट कर गिरे, पत्तों में कई पुराने और कुछ हरे भी थे। उनमें एक पत्ता था: ताजा, बड़ा और कोमल। बेचारे ने अभी हाल ही में अपनी जवानी के दिन देखे थे।

खैर, लू-बवंडर के दिन थे, वह चक्कर खाता, नाचता, उड़ता ही चला गया। उड़ते-उड़ते पत्ता एक मंत्री की कोठी के भीतर वाले बरामदे में जा गिरा, चलो कुछ तो सांस मिली। एक नौकर भीतर से आया और बरामदे का पर्दा गिरा गया। बरामदे में कुछ ठंडक भी आयी और पत्ता लू के सीधे झोंकों के टकराव से भी बचा।

गर्म हवा का झोंका जब कभी जोर-जोर से आता. पत्ता सरक कर आगे बढ़ जाता। सरकते-सरकते कमरे के दरवाजे के पास पहुंच गया। एक दासी ट्रे में शरबत के गिलास और कटे खरबूजों की प्लेटें लिए आई उसने कमरे का दरवाजा खोला। जाने कैसे, झोंक में पत्ता भी भीतर चला गया।

वाह ! बड़ा आलीशान कमरा है...। जंगल का वह बेचारा पत्ता यह शहरी ठाठबाट देख कर सहम-सा गया और ईरानी कालीन से चिपका पड़ा टुकुर-टुकुर देखता रहा। सोफे पर एक जौहरी और मंत्रीजी की पत्नी बैठी थी। दासी शरबत और खरबूजे की प्लेटें रखने लगी। मंत्रीजी की पत्नी गुस्सायी। चीख कर बोली, "मंत्रीजी के हिंयन काम करे वाली का सहूर ऐसा ही होत है क्या? देखत नहीं हो कि हिंया मोतियन के हार फैले हैं ? दूसरी तिपाई पे लायके रखो।"

दासी को डांट कर मंत्री की पत्नी जौहरी से बोली, "ई क्या छोटे-छोटे दिखउत होगे। बरे-बरे मोतिन की माला दिखाओ।"

जौहरी बोला, "देवीजी, जब आप ब्याह कर आई थीं तब आपके पति ने मेरी दुकान से नकली मोतियों की माला खरीदी थी।"

"हां-हां, तब तो हमरे मंतरीजी बिचारे मामूली उकील रहे।" मंत्री पत्नी बोली।

जौहरी ने कहा, "फिर उन्होंने आपके लिए असली मोतियों की माला खरीदी।"

"हां, जब इलक्सन में जीते रहे।, इलक्सन में जो रुपया पारटी का बचा सो असली मोती खरीदे और अब तो हमारे वो बाणिज मंतरी हैं। अब हम बड़े मोतिन की माला पहिरेंगे कि जिससे दूसरी औरतें दूर से देख-देख के जलें।" मंत्री-पत्नी की ठसक देख कर पत्ते को बड़ा गुस्सा आया। सोचने लगा कि मेरे भी मनुष्यों की तरह यदि हाथ-पैर होते तो अभी उठ कर एक झापड़ मारता। घमंडिन। अपने बुरे दिन भूल गई और अब दूसरों का जी जला कर प्रसन्न होना चाहती है।

भगवान की कुछ ऐसी मरजी हुई कि नौकरानी के पैर से ठोकर खाकर पत्ता उछला और कूलर की ठंडी हवा के झोंके में बरबस उड़ता हुआ आकर मंत्री-पत्नी के मुंह से चिपक गया।

"उंह ! ये धूल-भरा पत्ता मरा कहां से आ गया ? नौकरानी, इसे फौरन बाहर फेंको।" मंत्री-पत्नी के हुकुम से बेचारा पत्ता बगीचे के लान पर फेंक दिया गया।

लू उसे फिर उड़ा ले चली। इस बार पत्ता एक संत्री के घर गिरा। संत्री कोई मामूली संत्री नहीं, नायब दारोगा था। दारोगाजी नायब पद पाकर एक गरीब विधवा की लड़की से शादी करना चाहते थे। दारोगाजी का चलन खराब देख कर विधवा ने यह रिश्ता मना कर दिया। एक दूसरे अच्छे वर से सगाई कर दी।

दारोगाजी को बड़ा गुस्सा आया। विधवा को धमकी भेजी कि तुम्हारी लड़की को उड़वा कर उसके नाक-कान कटवा दूंगा।

बेचारी विधवा अब बड़ी घबरायी। पड़ोस के एक डाक्टर साहब के यहां अपना दुखड़ा रोने गई। दयालु डाक्टर ने कहा, "पुलिस कप्तान मेरे मित्र हैं। मैं पुलिस का प्रबंध कर दूंगा। तुम शादी की तैयारी करो।"

फिर उसी दिन, जिस समय दारोगाजी अपने गुंडों के साथ विधवा की लड़की को उड़वाने का षड्यंत्र कर रहे थे, वह पत्ता भी वहीं दारोगाजी के कमरे में ही था। पत्ता सोच रहा था कि हे भगवान यह कैसा नीच आदमी है ! सरकार ने इसे रक्षक बनाया और यह भक्षक बन गया है। प्रभु इसे दंड दो। तभी दारोगा की दृष्टि पत्ते पर पड़ी।नौकर से कहा, "यह पत्ता यहां क्यों पड़ा है ? बाहर फेंको।"

पत्ता बाहर फेंका गया और उसके दस मिनट के बाद ही दारोगाजी और उनके गुंडे साथी पकड़े गए।

पत्ता गली में पड़ा-पड़ा अपने भाग्य और दुनिया की दशा पर विचार कर ही रहा था कि रात में भी लू चलने लगी। बेचारे दिन-भर के थके मुरझाये पत्ते को फिर उड़ना पड़ा।

इस बार पत्ता उड़ कर एक तंत्री के यहां पहुंचा। वह तंत्री या तांत्रिक, एक सूने मंदिर में एक निपूती सेठानी को माता बनाने के लिए दो बरस के एक बच्चे की बलि देने को था। बच्चा सेठानी कहीं से लायी थी। उसे बेहोश करके लिटा दिया गया था और तंत्री शराब पी-पीकर मंत्र जपते हुए, आग में घी छोड़ कर, 'स्वाहा-स्वाहा' कर रहा था। सेठानी कहती थी, "महाराज, जल्दी से बच्चे की बलि चढ़ाओ कहीं कोई आ न जाए।"

तंत्री नशे में गरजा, "सेठानी, खांडा तब चलाऊंगा जब तू मुझे हजार रुपये नकद देगी।"

सेठानी अपना सोने का हार उतार कर देने लगी। तभी बलि दिए जाने वाले बच्चे की मां पुलिस को लेकर आ गई। मां ने झट से बच्चे को उठा लिया। पुलिस ने सेठानी और तंत्री को

गिरफ्तार कर लिया। पर सेठानी गिड़गिड़ाकर दारोगा से बोली, "तुम मेरे सब गहने ले लो और मुझे छोड़ दो।" दारोगा ने सेठानी से रिश्वत लेकर उसे छोड़ दिया।

पत्ते को क्रोध आया। वह उड़ कर दारोगा के मुंह पर पड़ा। उसमें चिपकी धूल दारोगा की आंखों में जा पड़ी। दारोगा पत्ते को झटक कर फेंकते हुए बोला, "इसे बाहर फेंको।"

पत्ता फेंके जाने पर उड़ने लगा। वह सोच रहा था कि क्या दुनिया में सब बेईमान हो गए हैं... और मेरा अपमान कर रहे हैं।

उड़ते-उड़ते पत्ता एक बुढ़िया के यहां जा पहुंचा। गरीबी में उस बेचारी के घर के बर्तन तक बिक गए थे। वह बरसों के बाद घर आए अपने कमासुत बेटे को हाथ में ही नमक-रोटी दे रही

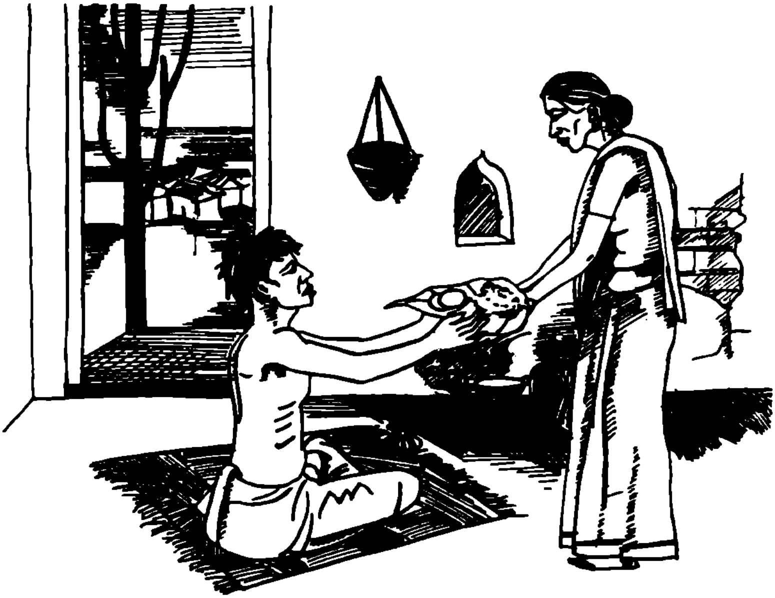

थी। सोच रही थी, 'भगवान, तूने मुझे इतना गरीब क्यों बनाया कि मैं अपने बेटे को थाली में खाना नहीं परोस सकती।' तभी उसने पत्ते को देखा, खुश हुई कहा, "भगवान तुम धन्य हो। यह पत्ता भेज दिया।" उसने पत्ते को उठाया, धोया और उस पर रोटी रख कर बेटे को दी।

दिन-भर के दुर्भाग्यपूर्ण अनुभवों के बाद पत्ते को लगा कि उसे अपनी सार्थकता मिली है, सच्चा प्यार मिला है, गरीब मुझे चाहते है।

गुंडों के बच्चे

एक बड़ा शहर था। वहां बड़ी चहल-पहल रहती थी। बहुत सारी मोटरगाड़ियां, बस, रिक्शे, टेम्पो, साइकिलें सबेरे से रात तक दौड़ती ही रहती थीं। बड़ी-बड़ी दुकानें, स्कूल, कालिज, व्यापार आदि उस शहर में भी खूब थे, जैसे कि बड़े शहरों में होते है। अच्छे-अच्छे सिनेमाघर, नाटक, खेल-तमाशे होते रहते थे। ये सब मजे में चल रहे थे कि एकाएक बड़ा हुल्लड़ मच गया। "हो हो हो हो! भागो-भागो," पटापट दुकानें बंद होने लगीं, चारों ओर भगदड़ मच गई। कोई लम्बू मियां ऊंट की तरह भागते चले जा रहे हैं, तो कोई मुटल्लू बाबा डरे-चौंके हुए हाथी की तरह थपाथप दौड़ते हुए चले जा रहे हैं। जवान, बच्चे, बूढ़े सभी भाग रहे हैं। जैसे जंगल में शेरों के आने पर छोटे-बड़े जानवर अपनी जान बचाने के लिए दौड़ रहे हों। बात यह थी कि शहर के एक भाग में एकाएक दंगा हो गया था। बहुत-से मकान जला दिये गए। टॉफी, मिठाइयां, खिलौने और तरह-तरह के सामानों से भरी बहुत-सी दुकानें जला दी गईं। बहुत-से आदमियों ने बहुत-से आदमियों को मार डाला। किसी की गरदन कट गई, किसी के पेट में छुरा भोंका गया, किसी के

सीने में गोली लगी। बड़ा हाहाकार मच गया। कोई चीख रहा है कि "बचाओ-बचाओ," कोई "हाय मरा-हाय मरा" चिल्ला रहा है। कहीं बच्चे चीख रहे हैं, कहीं औरतें रो रही हैं, बूढ़े सिसक रहे हैं— बस यही हाल था। चारों ओर तबाही-ही-तबाही मची हुई थी।

एक छोटी-सी तीन-चार बरस की लड़की थी। उस बेचारी का घर जला दिया गया था। उसके मां और बाप दोनों ही उसके सामने छुरे से मारे गए थे। वह, उसकी दादी और बहन घबराहट में घर छोड़ कर भागीं। फिर गलियों में बहुत-से लोगों की घबराहट भरी दौड़-भाग में दादी और बहन कहीं छूट गईं। वह बेचारी नन्ही-सी बच्ची अकेली रह गई। कभी रोती हुई मम्मी, दादी और पापा को पुकारती सड़क पर आ जाए तो पुलिसवाले उसे डांट कर भगा दें। सब के घरों के दरवाजे बंद। गलियां सुनसान। लड़की मुंह में उंगली डाले, भौंचक-सी इधर-उधर देखती हुई कई गलियां पार कर गई।

रात होने को आयी। बच्ची चलते-चलते संयोग से ऐसे मुहल्ले में पहुंच गई, जहां शहर भर के गुंडों के सरदार बिंदा और नंदा नामक दो भाई रहते थे। वहां एक घर की जंगलेदार खिड़की खुली दिखी, बच्चों की आवाजें भी बच्ची के कानों में पड़ी। वह बेचारी बड़ी भूखी थी। खाना मांगने के लिए चबूतरे पर चढ़ आई और खिड़की से झांकने लगी।

यह घर बिंदा-नंदा का ही था। उनके चारों बेटे पुन्नू, मुन्नू, राजू और रंजीत भी आपस में दंगे का खेल खेल रहे थे। दफ्तियों के छुरे और खपचियों की तलवारों से हिंदू-मुसलमान बन कर लड़ रहे थे। ऊपर उनकी मम्मियां उन्हें ऐसे खेलों से बरजती और झिड़कती हैं। उन्होंने उनके पापाओं से बड़ा झगड़ा किया था, मगर वे तो धरम के नाम से बुलाए जाने से जोश में छुरे ले-लेकर चले गए थे। उनके बच्चों में यह समझ आयी कि जब उनके पापा लोग दंगे को धरम का काम मानते हैं, तो हम भी वही खेल खेलेंगे। इस तरह नीचे बैठक में खुल कर शोर न मचाते हुए भी मारो-काटो का दुंद मचा रहे थे कि एकाएक उनके कानों में एक मीठी-सी आवाज आई, "हमको भूख लगी है, खाना दो।"

बच्चों ने खिड़की पर एक छोटी-सी बच्ची को देखा। रंजीत ने तख्त पर चढ़ कर खिड़की के पास आते हुए पूछा, "तू कौन है ?"

"मुन्नी !"

"कहां से आई है ?"

"बड़ी दूर से। हमें बड़ी भूख लगी है।"

"पहले यह बता कि तू अपने घर से भाग क्यों आई ?"

बच्ची रोने लगी, कहा, "बहुत-से आदमियों ने घर में घुस के हमारे मम्मी, पापा और भाई को मार डाला।"

"हाय बेचारी ! अरे पुन्नू, कुर्सी पर चढ़ कर जल्दी से सिटकनी और कुंडी खोल दो। कोई इसको बाहर मार न डाले। हाय बेचारी !"

जल्दी से दरवाजा खोल कर मुन्नी को भीतर ले लिया। झट से दरवाजे की सिटकनी और कुंडी भी चढ़ा दी। इस बार खुली खिड़की को भी बंद कर लिया कि कहीं मुन्नी को मारने वाले उसे

देख न लें। सब ने उसे प्यार किया। रंजीत ने पुन्नू से कहा कि अपनी मम्मी से एक परांठा ले आओ।

पुन्नू बोला, "मैं खा चुका हूं, मम्मी मुझे नहीं देंगी।"

मुन्नू बोला, "मैंने अभी नहीं खाया, मैं लाता हूं इसे खिला दूंगा," "और तुम ?" राजू ने पूछा।

"अरे एक दिन भूखा भी रह गया, तो क्या हुआ ? इस बिचारी पर तो मुसीबत पड़ी है।" कह कर मुन्नू ऊपर चला गया।

पुन्नू ने रंजीत से कहा, "भैया ये हिन्दू है या मुसलमान ?" मुन्नी यह न बतला सकी। उसके मां और बाप भी मम्मी-पापा थे। उसका नाम मुन्नी था। इससे कुछ समझ में नहीं आता था। फिर बातों में उसने बतलाया कि उसका घर मस्जिद के पास था और उसके पापा नमाज पढ़ के आये, खाना खा रहे थे तभी भीड़ ने घुस कर मारा।

मुन्नू, परांठे, तरकारी और एक गुड़ की डली लेकर आ गया। पुन्नू बोला, "मुन्नू, इसको खाना मत देना,यह मुसलमान है।"

यह सुन कर मुन्नी रोने लगी। राजू ने भी मना किया पर मुन्नू बोला, "भूखे को खिलाना पुण्य का काम है।"

राजू बोला, "हमारे चाचा और पापा तो उन दुष्टों का संहार करने गए हैं और तुम इसे खिलाओगे।"

रंजीत बोला, "नहीं, इसको पटक कर मार डालना चाहिए!"

मुन्नी डर के मारे रोना तक भूल कर हक्का-बक्का हो गई। मुन्नू ने फौरन ही उसके सिर पर प्यार से हाथ रख कर कहा, "जिसको शरण दी उसी को मारोगे ? तुम्हें शरम नहीं आती, रंजीत। लो मुन्नी खाना खाओ।"

मुन्नी बेचारी ने दो-चार ही गस्से खाए और फिर वह इतनी थकी हुई थी कि खाते-खाते ही सो गई। अब तक इस बच्ची पर सब के मन में थोड़ी या बहुत दया उपज ही आई थी। बात यह थी कि उनकी माताएं बहुत धार्मिक और भली थीं। वे आज दिन भर बहुत ही दुखी और उदास रही हैं।

पुन्नू ने कहा "भैया, हमें मम्मी से चल कर कह देना चाहिए। पापा आएंगे इसे देखेंगे तो जरूर मार डालेंगे।"

रंजीत ने कहा "मुझे तो इस बात का पूरा शक है। देखा नहीं था, कितने जोश में छुरे लेकर गए थे हमारे और तुम्हारे पापा। आज उन्होंने बहुतों को मारा होगा, फिर इसे ही क्यों छोड़ेगे ।"

"यह तो सच है मगर हमारी-तुम्हारी मम्मियां भी उनसे कैसे बचा सकेंगी। देखा नहीं था कि मम्मी-चाची के चिल्लाने का कोई असर उन पर नहीं पड़ा था।" राजू बोला।

मुन्नू बोला, "इसको तो हमी लोग बचा सकते हैं। ऐसा करो कि हम दोनों अपने लिहाफ लाकर यहीं सो रहें। यह भी आराम पा जाएगी और लिहाफ में ढकी रहने से कोई इसे देख भी न सकेगा।" बस, यह तय करके कहानी सुनने-सुनाने का बहाना बना कर चारों बच्चे नीचे ही अपने तकिये और लिहाफ ले आए। मुन्नी को लिहाफ में छिपा कर वे उसे बराबर बचाए रखने के उपाय सोचने लगे। सबेरे इसको जीने के नीचे वाली बुखारी में छिपा देंगे। फिर टीले पर मिट्टी खोद कर इसके लिए एक मिट्टी का घर बना देंगे, उसमें यह रहा करेगी। बहुत देर तक ऐसी ही दया-प्रेम भरी योजनाएं बनाते-बनाते उन्होंने यहां तक सोच डाला कि बड़े होकर अपने टीले पर वह सब बेचारों के लिए मिट्टी के घर बनवा देंगे। बातें करते-करते वे सो गए।

थोड़ी देर बाद राजू-रंजीत की मम्मी यह देखने के लिए नीचे आई कि बच्चे ठीक से ओढ़-लपेट कर सो रहे हैं या नहीं। उन्होंने मुन्नू को ठीक तरह से ओढ़ाने के लिए पुन्नू की तरफ अधिक दबे हुए लिहाफ को घसीटा तो मुन्नी जाग उठी। वह रोयी तो उन्होंने लिहाफ पूरा उठा कर देखा। बच्चों को जगाया, पूछा, "यह कौन है ?"

मुन्नू रोने लगा, "चाची, इसे निकालना नईं, निकालना नईं। हमने इसे बचाया है।"

अपने आग्रह में बच्चों ने एक ऐसा करुण कराहभरा शोर मचाया कि राजू, रंजीत की मम्मी की बात किसी के कान में पड़ी ही नहीं। इतने में पुन्नू-मुन्नू की मम्मी भी नीचे आ गई। बड़ी मुश्किल से वे अपने बच्चों से मुन्नी के सम्बंध में सब बातें जान सकीं। सुन कर उन्होंने प्यार से मुन्नी को चिपटा लिया। पर उनको भी इस बात का बड़ा ही डर लग रहा था कि जब बच्चों के पापा आएंगे तब इसी बच्ची को उनके क्रोध से कैसे बचाया जा सकेगा।

रंजीत बोला, "मम्मी, तुम सच्ची कहती हो, वे आएंगे और कहानी वाले राक्षस की तरह मानुस गंध-मानुस गंध—"

"खबरदार, अपने पापा को इस तरह कहते हैं।" पुन्नू-मुन्नू की मम्मी ने डांटा और मुन्नी को छिपाने के लिए वे अपने साथ सब बच्चों को भी ऊपर सुलाने के लिए वे ले गईं। दोनों मम्मियां आपस में इस बात पर दुख करने लगीं कि बच्चों पर पिताओं के बुरे काम का कैसा बुरा असर पड़ता है कि वे अपने बाप को भी राक्षस कहने लगते हैं, खैर।

रात में किसी समय नंदा-बिंदा घर पहुंचे। उस वक्त तो वे मुन्नी को देख नहीं पाए, पर सबेरे कोठरी के अंदर लिहाफों के बीच छिपायी हुई मुन्नी को नंदा ने देख ही लिया। वह उसे ऊपर कर पूछने लगा कि तू कौन है, कहां से आई है। चारों बच्चे डर के मारे सिमट कर बाहर खड़े हो गए। उनकी मम्मियां भी आ गईं। नंदा ने जब दुबारा डांट कर पूछा तो पुन्नू-मुन्नू रोते हुए बोले, "आप हमें मार डालिए पर इसे मत मारिए, इसे हमने बचाया है।"

बच्चों का शोर सुन कर बिंदा भी वहां पहुंच गए। बिंदा ने अपनी पत्नी से सब बात पूछी और हंस कर कहा, "अरे, बच्चो, तुमने यह क्यों समझ लिया कि तुम्हारे पापा-चाचा मुन्ने-मुन्ने बच्चों को भी बेरहमी से मारेंगे ?"

नंदा बोला, "हमने तो कल भी तुम्हारी मम्मियों की अच्छी-अच्छी बातें सुन कर किसी को भी नहीं मारा बल्कि बहुतों की जान बचाई।"

चारों बच्चे और उनकी मम्मियां ये बातें सुन कर बहुत खुश हुईं और फिर मुन्नी चारों भाइयों की बहन बन कर वहीं रहने लगी।

इकलौता लाल

फूलघाटी से दो हजार फीट ऊपर पहाड़ के आसपास-बसे हुए चार गांवों में सईसांझ से सनसनी फैल गई थी कि पावर हाउस के मजदूर, इन पर हमला करने वाले हैं। पुरुषों और जवान लड़कों की टोलियां इधर-उधर बांतें करती चौकन्नी डोल रही थीं। कांते, बल्लम, तलवारों और लाठियों का सामूहिक संगठन यहां पिछले पचास वर्षों में कभी नहीं देखा गया। बड़े-बूढ़े कहते हैं कि उनके बचपन में एक बार पूरब की तरफ से डाकुओं का दल आया था तब गांव वाले लड़े थे, फिर कभी कोई वारदात नहीं हुई, हथियारों पर कभी खून लगा भी तो रीछ या तेंदुए का ही और अब ये दंगे का डर फैला है, सुना है पांच सौ आदमी हमला करेंगे। औरतें आपस में कहतीं, "भला ये भी कोई न्याय है, हमारी ही गैया-बछियां नित्य लूटमार के खा जाए और बोलने पर हमी को मारने आएं। इनका सत्यानाश हो जाए। इनके घर-द्वार औरतें-बच्चे क्या नहीं हैं ?"

यहां से दो मील उत्तर में झरने पर पावर हाउस बन रहा है, सैकड़ों मजदूर वहां काम करते हैं। कहा जाता है कि सरहद पार हमसे दुश्मनी मानने वाले देश के गोयंदों ने मजदूरों के दिलों में धर्म का जोश और नफरत की आग भड़काई है। पावार हाउस निर्माण के कार्य में भी वे लोग ढील डालने लगे हैं, आसपास के गांवों से रोज पांच-सात गायें और भेड़ें गायब होने लगी हैं और कल शाम से तो वे लोग अपने अफसरों की हुक्म-उदूली भी कर रहे हैं। आज दोपहर में एक बड़े अफसर का आदमी इन गांवों से मदद मांगने आया था कि तैयार रहो, होशियार रहो, दुश्मन धोखे से वार करेगा और फिर पावर हाउस का बांध तोड़ेगा। सुनते ही सनसनी फैल गई और बचाव की तैयारियां होने लगीं। बच्चे घरों में बंद, जानवर बाड़ों में बंद, बूढ़े चिंतामग्न फीके फक्क चेहरे लटकाए कलयुग को कोस रहे हैं, जवान शेखी हांक रहे हैं कि दुश्मनों की बोटी-बोटी काट डालेंगे।

पावर हाउस की मजदूर बस्तियों और अफसर इंजीनियरों के बंगलों क्वार्टरों में भी सनसनी फैली हुई है। रक्षा का प्रबंध कच्चा है, सरकार ने कभी कल्पना न की थी कि यहां पर भी दंगे हो सकते हैं। इंजीनियरों अफसरों ने मजदूरों के एक पक्ष को अपनी ओर मिला लिया था। मजदूर ड्राइवरों, मिस्त्री, पास-पड़ोस के गांव वाले सचेत कर दिये गए थे। राजधानी से फौज बुलाने के लिए भी एक विश्वस्त आदमी भेजा गया था। अपने घरों परिवारों की रक्षा के साथ ही साथ सबसे बड़ी आन की बात यह थी कि बलवाई बांध की दीवार न तोड़ सकें,नहीं तो पावर हाउस की घाटी भरे कटोरे की तरह डूब जाएगी, एक धर्म विशेष वालों की मजदूर-बस्ती डूबेगी, नीचे के गांवों में बाढ़ आएगी, लाखों रुपयों की मशीनों और गांवों के धन-जन का नुकसान होगा। ठेकेदार बदमाश है वह विदेशी गोयन्दों से मिल गया है। आज दोपहर में उसने डिप्टी साहब के मुंह पर तमाचा मारा,फिर चीफ साहब का अपमान किया और पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर उसके धरम भाई तीन सौ मजदूरों ने अपना कामकाज छोड़ तुरंत संगठित होकर सुरक्षा पुलिस के हैडक्वार्टर को घेर

लिया था। बड़ी गाली-गलौज और उत्तेजना फैली लेकिन बंदूकों के भय से भीड़ को लौटना पड़ा। लौटे हुए कुंठित बलवाइयों ने अपने विरोधी धर्म वाले मजदूरों की बस्तियों पर भी हमला करने का प्रयत्न किया परंतु देवीसिंह शॉवेल ड्राइवर के बेटे अनूप ने पचास साथियों के साथ अद्‌भुत फुर्ती और हिम्मत के साथ पहाड़ी से पत्थर लुढ़काने शुरू किए और ऊपर चढ़ते हुए हमलावरों पर जलती मशालें फेंकीं। तब तक पीछे से मर्दों की टोलियां भी काम बंद हो जाने के कारण घर लौटती हुई दुश्मनों से गुंथ गई। दो चक्की के पाटों में बलवाई पिसे और पिट कर भागे। मर्दों में इस तरफ के पांच व्यक्ति जख्मी हुए और बलवाइयों में दो की जानें गई तथा कई जख्मी हुए, जिनमें बुलाकी फिटर का लड़का मोटू भी था।

मोटू बस्ती भर के लड़कों का खिलौना था। वह सत्रह बरस का जवान, ठिगना, काला और महा मोटा था। जैसी देह मोटी थी वैसी ही बुद्धि भी। मोटू भागते समय लड़कों के द्वारा पकड़ा गया। उसके हाथ में पत्थर की नोक चुभी थी, थोड़ा-बहुत खून भी बह रहा था। इन लड़कों ने जब उसे पकड़ा तो वह जोश में आकर गालियां देने लगा। इस पर उसकी खूब पिटाई हुई। अनूप को दया आ गई, उसने छुड़वा दिया लेकिन लड़कों ने चलते-चलते भी उसकी जान न छोड़ी, एक लड़का अपने घर से पटाखे की छछूंदरें ले आया। उसकी दुम बना कर मोटू के इजारबंद में बांधी गई, उसके हाथ बांधे गए और छछूंदरों में माचिस लगा कर उसे छोड़ दिया गया। छछूंदरें पटापट दगतीं,

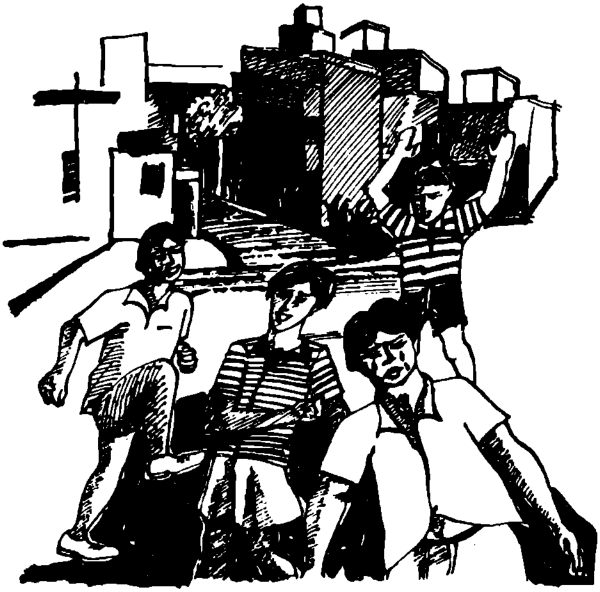

मोटू भय से चिल्लाता हुआ उछलता, लड़के हंसते। मोटू लुढ़कता-फढ़कता, गिरता-उठता किसी तरह अपनी जान बचा कर भागा। सुनसान रात। ठंडी हवा के झोंके। झींगुरों-झिल्लियों की झंकार और कुत्तों के भौंकने की आवाजें। पावर हाउस के इर्दगिर्द से लेकर ऊंचे पहाड़ के आसपास बसे

चार गांवों की बस्ती से बीच-बीच में नारों का शोर उठता था। इधर से एक भी जवाबी नारा नहीं लगता था। शाम को ही चीफ साहब ने लोगों को सचेत कर दिया था कि अपनी ओर से तब तक शांत रहना जब तक कि हमला न हो। उन्होंने अपील की थी कि बांध की रक्षा करो। दुश्मनों के प्रभाव में आकर हमारे ही कुछ देशवासी देश के जन-धन को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। वे बांध तोड़ कर पावर हाउस को डुबाना चाहते हैं, नीचे के गांवों को बाढ़ से नष्ट करना चाहते हैं। जब तक यहां सुरक्षा के लिए फौज न आ जाए तब तक हमें प्राण-पण से अपने जन-धन की रक्षा करनी है।

अनूपसिंह अपनी टोली के पचास और गांवों के लगभग सौ लड़कों का सरदार था। बांध की दीवार के दोनों सिरों पर बारह-बारह बंदूकधारी सिपाही तैनात थे, आठ सिपाही दीवार के ऊपर गश्त लगा रहे थे। अनूप के दस स्काउट एक जगह से दूसरी जगह सूचनाएं और आदेश पहुंचाने के काम पर नियुक्त थे और स्वयं अनूप चारों ओर घूम-घूम कर चौकसी कर रहा था।

आधी रात के घंटे ड्यूटी आफिस से बजने लगे। अनूपसिंह और गुरदित्ता बल्लम,टार्च और करौलियों से सज्जित बांधवाली पहाड़ी की ओर जा रहे थे। आसपास कहीं पत्ता भी खड़कता तो दोनों के कान ठनक जाते थे। चलते-चलते गुरदित्ता धीमे स्वर में कहने लगा, "ये मुसलमान कभी हमारे देश के प्रति सच्चे नहीं बनेंगे।"

"इसमें हिन्दू-मुसलमान का सवाल नहीं। हिन्दुओं में क्या जयचंद नहीं हुए ?"

"जयचंदों की बात न्यारी है। जयचंद व्यक्तिगत शत्रुता में स्वदेश का हित भूला था लेकिन ये लोग तो देश को ही शत्रु मानते है।" गुरदित्ता बोला।

"वो एक ही बात है।" पीछे कहीं पैरों की रपटन हुई, पत्ते खड़के। दोनों के कान खड़े हो गए।

"कोई है।"

"देखना चाहिए।" कह कर अनूप ने कड़कदार आवाज लगाई, "कौन है ?"

कोई उत्तर न मिला। टार्च की रोशनी फैल गई। कहीं कोई दिखलाई न दिया इससे और शक हुआ। दाहिनी ओर की चट्टान के पीछे फिर किसी के दौड़ने की आहट हुई। गुरदित्ता का चेहरा भय से सफेद हो गया। उसके पैर पत्थर से जाम हो गए लेकिन अनूप गुरदित्ता के हाथ से टार्च छीन कर फौरन उधर ही लपका। चट्टान पर चढ़ कर उसने टार्च की रोशनी फेंकी, एक काली आकृति घबराहट में नीचे की ओर भागती दिखलाई पड़ी। 'खबरदार' कहता हुआ अनूप फुर्ती से चट्टान के दूसरी ओर कूद कर उसे पकड़ने के लिए भागा। काली आकृति, ऐसा लगा कि दौड़ने-भागने की अधिक अभ्यस्त न थी, दौड़ते हुए गिर पड़ी, उसके मुंह से एक कराह निकल पड़ी। तब तक अनूप उसके पास पहुंच गया था। रोशनी में मुंह देखा तो मोटू की मां।

"अनूप, मैं हूं बेटे।"

परंतु इस समय अनूपसिंह को उसका 'बेटे' पुकारना अच्छा न लगा। उसने और सख्ती से पूछा, "इस वक्त यहां क्या करने आई हो ?"

मोटू की मां घबरा गई, कांपते हुए बोली, "मैं ... मैं उपले-ऊं-ऊं पत्ते ऊं-ऊं ..."

"ठीक-ठीक बोलो, क्यों आई थी ?"

मोटू की मां रोने लगी। तभी पीछे से गुरदित्ता आता दिखलाई दिया। वह घबरा गई अनूप के पैर पकड़ कर गिड़गिड़ाती हुई बोली, "मेरे करीमे की जान बचाना बेटा। वो मेरा इकलौता लाल है — जैसे तू अपने मां-बाप का इकलौता है। परदेशी गोयंदे उसे जबरदस्ती यहां पकड़ लाए हैं। उसकी जान न लेना बेटा। वो बिल्कुल बेकसूर है — बेकसूर है।"

औरत की बातों से अंदाज लगा कि मोटू और कुछ लोग यहीं आसपास हैं पर क्या करने आए हैं और उसकी मां यहां क्या कर रही है, यह अनूप जानना चाहता था। गुरदित्ता पास आ रहा है, उसके सामने ये स्त्री कभी खुल कर बात नहीं करेगी, यह सोच कर अनूप अपने सहज स्वर में बोला, "देखो चच्ची अगर मोटू की जान बचाना चाहती हो तो बताओ वो लोग इस वक्त यहां क्या कर रहे हैं ?"

मोटू की मां हिचकी। अनूप ने कहा कि "फिर मैं तेरे बेटे की जान न बचा सकूंगा।"

"तू वादा कर कि मेरे करीमे को आंच नहीं आएगी। तू तो मेरे करीमे को कई बार बचा चुका है। खुदा तेरा ..."

"है कहां — जल्दी बता। वादा करता हूं।"

"बांध की दीवार वाला पहाड़ तोड़ने —"

"घर भाग बुढ़िया। गुरदित्ता इधर आ। पत्ता न खड़के।"

अनूप सिंह के सामने महानाश का चित्र उपस्थित था। वह अब एक क्षण भी नहीं रुक सकता था।

विदेशी षड्यंत्रकारियों से बारूद पाकर सात आदमी बांध की दीवार तोड़ने के लिए चुपचाप उपक्रम कर रहे थे। विदेशी एक्सपर्ट बारूद का काम कर चुकने के बाद एकदम गायब हो जाना चाहता था, डायनामाइट के स्विच पर मोटू को बिठलाया गया था। अनूप टोह लेते हुए वहां पहुंच गया। गुरदित्ता और अनूप को देख कर मोटू घबरा गया, उसने चीखना चाहा। गुरदित्ता ने बल्लम ताना अनूप ने झटके से बल्लम की नोक हटा दी और मोटू के मुंह पर हाथ रख कर उस पर लद गया, बोला, "गुरदित्ता ये तार काट, फ्यूज खोल दे" कहते हुए उसने मोटू के मुंह में अपना रुमाल ठूंस दिया, फिर कहा, "गुरदित्ता, इसी तार से इसके हाथ पीछे कस कर बांध दे और पैर भी।"

मोटू को अच्छी तरह से बांध कर उन्होंने वहीं डाल दिया और दबे पांव पहाड़ की तरफ चले। तभी ऊपर से इन पर टार्च की रोशनी पड़ी।

"धांय ! धांय !" कहीं से उनकी ओर गोली चली। दोनों झुक कर बच गए और फिर दनादन गोलियां दगने लगीं।

दीवार के पास वाले पहरेदारों ने भी जवाबी फायर दागे। चारों ओर शोर मच गया।

"गुरदित्ता, ये लोग इसी ओर आएंगे। रस्सी कमर से खोल ले, फंदे तैयार रख, दो चार को तो फंसाना ही है।"

कमर से रस्सियां खोल कर उनके फंदे ढीले कर लिए गए। ऊपर से राइफल दागते हुए असफल षड्यंत्रकारी बराबर नीचे उतर रहे थे। अनूप और गुरदित्ता अंधेरे में छिप कर बैठे थे। अनूप बोला, "राइफल इनके पास एक ही है। मैं उस पर ही फंदा डालूंगा, तू पीछे वालों पर बर्छी फेंकना, एकाध गोयंदा तो पकड़ना ही है, जाने न पाए।"

टुकड़ी पास आई। गुरदित्ता ने अपनी बर्छी फेंकी, पीछे एक के लगी राइफल वाले ने हाथ उठाया ही था कि अनूप के सधे हाथों की रस्सी झटके के साथ उसके गले में पड़ गई। उसका निशान चूका, एक हाथ से फंदा कसने से बचाना चाहा मगर तब तक जंगली जानवरों की गर्दन फंसाने में पटु अनूप सिंह का हाथ दुश्मन के गले में फंदा बन कर कस चुका था। खींचने के लिए वह अपनी जगह से उठा खड़ा हुआ। फंसे हुए शत्रु ने बेतहाशा गोलियां दागनी शुरू कीं। दूसरे दो इन्हें पकड़ने झपटे। एक गुरदित्ता की बर्छी से घायल हुआ दूसरा भागा, और राइफल की अंतिम गोली चली।

"अहा ... !" अनूप के मुख से चीख निकल गई।

नीचे से सिपाहियों की फैरें दगनी आरम्भ हो गई थीं। विदेशी षड्यंत्रकारी पकड़ा गया, अनूप सिंह के कमजोर हाथों से तभी रस्सी छूटी। सब लोग उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

"गुरदित्ता।" अनूप ने धीरे से पुकारा, गुरदित्ता अपने जख्मी मित्र की बात सुनने के लिए झुका। "बापू से कहना, मैंने देश की सेवा में प्राण दिए हैं, दुखी न हों। और ... और मोटू के बंधन चुपचाप खोल के उसे निकाल दे। वह न फंसे। वह अपने मां-बाप का इकलौता है — मेरी तरह !" अपने मां-बाप का इकलौता, सत्रह वर्ष का अनूप सिंह साम्प्रदायिक विष से बुझ कर अस्त हो गया।

चुनाव

हस्तिनापुर में राजा प्रतीप का दरबार लगा हुआ है। राजा का दरबार पत्थर का अवश्य बना हुआ है पर बहुत ऊंचा और भव्य नहीं है, वह कलात्मक भी नहीं है। हां, उसकी छत में सोना मढ़ा हुआ है और खम्भे चांदी से चमचमा रहे हैं। महाराज जिस सिंहासन पर विराजमान हैं वह ठोस सोने का है। सारे दरबारी, बड़े-बड़े सेठ-साहूकार और बड़े-बड़े सेनापति सिपहसालार उस दरबार में बैठे हैं, जिधर देखा उधर केवल धोती और दुपट्टे के रूप में ही वस्त्र प्रयोग में लाते हैं, पर सोने और मणि-माणिक्यों से खूब लदे रहते हैं। दरबार में सिंहासन के नीचे ही तीन

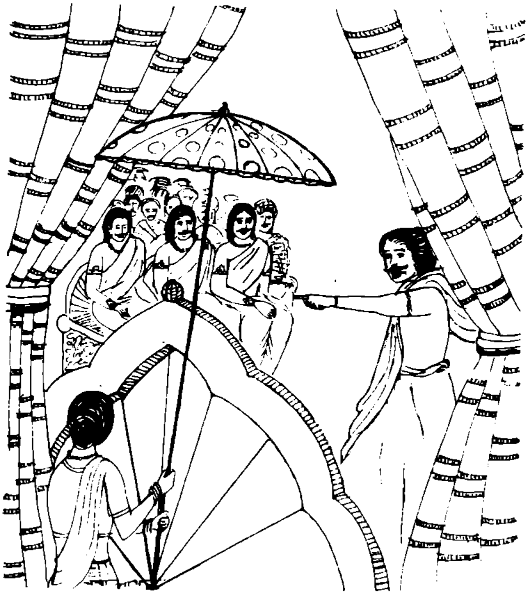

चौकियों पर राजा प्रतीप के तीन राजकुमार बैठे हैं। बड़े का नाम देवापि है, मझले का बाहलीक और तीसरे का शांतनु। शांतनु अपने दोनों बड़े भाइयों से छोटा था चूंकि वह राजा प्रतीप के बुढ़ापे की संतान है और उनके जन्म से उनके मन को बड़ी शांति मिली थी, इसलिए उनका शांतनु नाम रखा गया है।

मंत्री ने खड़े होकर कहा, "महाराज, अपनी वृद्धावस्था पर विचार करके अब एक युवराज का चुनाव करना चाहते हैं। राजकुमारों में देवापि सबसे बड़े हैं।"

मंत्री अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि सभा में बैठा एक साधारण व्यक्ति सहसा बोल उठा, "देवापि को हम अपना युवराज नहीं बनाएंगे। वह विद्वान हैं, सब तरह से भले हैं, परंतु दुर्भाग्य से वह कोढ़ी हैं। हमें युवराज के चुनाव के मामले में शुभ-अशुभ का विचार रखना ही होगा।"

देवापि ने तुरंत खड़े होकर पहले अपने पिता, फिर सभा के बड़े लोगों को हाथ जोड़ कर कहा, "मेरा मन भी राजकर्मों से अधिक ऋषिकर्मों में लगने लगा है, इसलिए मैं अपने मन से अपने छोटे भाइयों के लिए राजगद्दी का त्याग करता हूं।" यह कह कर वह फिर अपने आसन पर बैठ गए।

मंत्री के कुछ कहने से पहले ही इस बार राजकुमार बाह्लीक उठे और महाराज को हाथ जोड़ कर सविनय बोले, "हे महाराज, मैं भी यहां नहीं रहना चाहता। मैं सिन्धु नदी के पार उन देशों को जीतना चाहता हूं, जो कभी हमारे पुरखों की भूमि थी। मुझे महाराज ऐसा ही करने की आज्ञा दें।"

अब अकेले एक शांतनु ही बच गए थे, उन्हें युवराज चुन लिया गया। यही राजा शांतनु महाभारत युद्ध के नायक युधिष्ठिर, दुर्योधन आदि के परबाबा थे।

अंतरिक्ष-सूट में बंदर

आकाश के अनगिनत तारों में हमारी धरती की तरह ऐसी बहुत-सी धरती हैं, जिनकी सभ्यता शायद हमसे अधिक बढ़ी-चढ़ी हुई है। एक जगह तो नन्हे-मुन्ने बच्चे तक अंतरिक्ष की सैर किया करते हैं। उन्होंने ऐसे अंतरिक्ष-सूट बना लिये हैं, जिसमें छोटी किंतु बड़ी ही शक्तिशाली मशीनें लगी हुई हैं। नन्हे-नन्हे ट्रांजिस्टरों जैसे राकेट लगे हुए हैं। बच्चे उसे पहन कर मशीनें चलाते हुए आकाश में लाखों मील की सैर बड़ी आसानी से कर लिया करते हैं। उन्हीं में एक लड़की थी। उसकी आयु आठ-नौ साल से अधिक न थी पर वह बड़ी तेज और साहसी थी। अपने स्कूल की अंतरिक्ष दौड़ों में वह कई बार फर्स्ट आ चुकी थी और छुट्टियों में अक्सर वह इतनी-इतनी दूर उड़ा करती थी, जितनी दूर तक उस दुनिया के बड़े-बड़े उड़ाकू भी नहीं गए होते थे।

एक दिन अपना अंतरिक्ष-सूट पहन कर वह लड़की उड़ी और खेल के जोश में अपनी उड़ान की गति तेज करते-करते आकाश में ऐसी जगह पहुंच गई, जहां लाखों मील तक घना अंधकार छाया था। बस, अंधेरा-ही-अंधेरा, घटाटोप अंधेरा। अंधेरे के कारण वह लड़की घबरा तो अवश्य गई पर उसने हिम्मत न हारी। अपने सूट में लगी नन्ही शक्तिशाली मशीनों की सहायता से पूरी स्पीड में, यानी एक सेकंड में पांच हजार किलोमीटर की उड़ान भरते हुए दो घंटे में आखिरकार उसने वह अंधकार पार कर ही लिया। संयोग से वह हमारी पृथ्वी पर आ गई और कश्मीर में अमरनाथ के पास एक झील के किनारे उतरी। वह लड़की बेहद थक गई थी और नई दुनिया में आने के कारण कुछ घबराई हुई भी थी। फिर भी, आसपास का दृश्य देखकर वह बड़ी खुश हुई। सुंदर झील देख कर उसकी नहाने की इच्छा हुई। एक चट्टान की आड़ में अपना अंतरिक्ष-सूट रख कर वह झील में नहाने लगी। उसकी दुनिया में जलवायु तो लगभग हमारी दुनिया के जैसी ही थी, पर वहां का पानी यहां जैसा निर्मल और शीतल नहीं होता था। हवा में भी ऐसी बहार नहीं होती थी। इतने चटक रंग के सुंदर सुगंधित फूल भी उसने पहली ही बार देखे थे। नहा-धोकर वह तरोताजा हो गई और उसे भूख भी लग आई। भोजन की तलाश में वह आसपास भटकने लगी। उसने अंतरिक्ष सूट अपने कंधे पर रख लिया था।

झील के पास ही पेड़ों के झुरमुट में एक बूढ़े साधु रहते थे। उनके पास बंदर-बंदरिया का एक पालतू जोड़ा भी था। बूढ़े बाबा ने अपनी कुटी के सामने एक बड़ी सुंदर और प्यारी-प्यारी छोटी लड़की को भटकते देखा तो उठ कर आए और उससे पूछने लगे, "बेटी कहां से आई हो?" वह लड़की उनकी बोली तो न समझी पर बात समझ गई। आकाश की ओर संकेत करके उसने कहा कि परलोक से आई हूं और भूखी हूं। बूढ़े बाबा भी उसके आकाश की ओर वाले इशारे को तो न समझे पर भूख की बात समझ गए। तुरंत कुटी में से मीठे फल ले आए। लड़की खुशी से खाने लगी। बूढ़े बाबा ने उसके लिए तुरंत अपनी गाय दुही और दूध ले आए। लड़की को बड़ा स्वाद

सुख मिला। बोली न समझने पर भी इशारों से खूब हंसाइयां हुई। बाबा ने बंदर-बंदरिया के खेल दिखला कर उसको खूब हंसाया। लड़की अब अपनी दुनिया, अपने घर जाने के लिए अंतरिक्ष-सूट पहनने लगी। यह अजब पोशाक देख कर बाबा को बड़ी हैरानी हुई। उन्हें शायद यह अचरज लगा होगा कि यह जो अभी प्यारी-प्यारी लड़की जैसी लग रही थी, एकाएक बेदुम की विचित्र बंदरिया कैसे बन गई। और फिर उस 'बंदरिया' ने एकाएक अपने सूट में टंगे हुए, एक नन्हे से चक्के को घुमाया और सर्र से ऊपर उठ गई। बाबाजी को अब लड़की के उस संकेत का सही अनुमान लगा, जो उसने अपने घर का पता बतलाने के लिए आकाश की ओर उठा कर किया था। खैर!

लड़की पांच-छह घंटे के बाद अपनी दुनिया में पहुंच गई। फिर तो उसे ऐसा चस्का लग गया कि हर छुट्टी के दिन वह बाबाजी के पास उड़ आती और मजे से झील में तैरती, नहाती, फल खाती और बंदर-बंदरिया के तमाशे देख कर बाबाजी के साथ खूब हंसा करती थी। आते-जाते वह थोड़ी बहुत हिन्दी भी सीख गई।

बंदर उस लड़की को अपना अंतरिक्ष-सूट उतारते, पहनते और नन्हा चक्का घुमा कर उड़ते हुए बराबर गौर से देखा करता था। एक दिन जब लड़की नहा रही थी और बाबाजी फल तोड़ने गए थे, बन्दर ने वह अंतरिक्ष-सूट पहन लिया और चक्के को घुमाते ही उड़ने लगा। लड़की ने नहाते हुए देखा और बड़ी घबराई। बाबाजी ने भी देखा और परेशान होकर दौड़ते हुए आए। बंदर आसमान में उड़-उड़ कर परेशान हो रहा था और दूसरे पंछियों को भी अपनी उल्टी-सीधी उड़ानों से परेशान कर रहा था। कभी चक्का घुमाते हुए ही सर्र से ऊपर जाता फिर नीचे आता। कभी घबराहट में दूसरा चक्का घुमाता और उलट जाता। वह भी घबरा रहा था और घबराहट में दोनों चक्के घुमा कर वह और भी परेशान हो रहा था। कभी सर्र से ऊपर कभी सर्र से नीचे कभी खट से सीधा कभी पट से उल्टा।

लड़की को यह घबराहट थी कि अगर उसकी मशीनें बिगड़ गई तो वह अपने घर कैसे पहुंचेगी। वह रोने लगी। बाबाजी ने उसे दिलासा दिया और बंदर को नीचे लाने की तरकीब करने लगे। उन्होंने बंदरिया के गले में रस्सी का फंदा डाल कर पेड़ की ऊंची डाल से बांध दिया और उसे सड़ासड़ संटिया मारने लगे। बंदरिया जोर-जोर से चीं चीं चीं चिल्लाने लगी। बंदर उसकी आवाज सुन कर घबरा गया।और उलटे-सीधे चक्के घुमा कर नीचे आने में सफल हुआ। मशीनों के कलपुर्जे सौभाग्य से ठीक थे। बाबाजी ने उसके सूट में टंगे झोले में फल रख दिएऔर वह उड़ गई।

उस दिन बंदरलीला के कारण उसे घर पहुंचने में काफी देर हो गई। जब उसके मां-बाप ने पूछा तो उसने सच-सच बतला दिया और अपने घरवालों को हमारी दुनिया के फल खिलाए। वे सब बड़े प्रसन्न हुए। अगली छुट्टी पड़ने पर वे अपनी बेटी के साथ बाबाजी से मिलने आए। अपने यहां के मेवे खिलाए। पर हमारे फल उनके मेवों से अधिक स्वादिष्ट थे। चलते समय लड़की के माता-पिता ने बाबाजी से कहा कि हमारी दुनिया की सैर करने चलिए। वह उनके लिए एक अंतरिक्ष-सूट भी अपने साथ लाए थे। परंतु बाबाजी ने लड़की के द्वारा उसके पिता से कहा कि जब उनके भारत देश के बच्चे बड़े होकर ऐसा ही सूट ईजाद कर लेंगे तभी वह आएंगे। बच्चो, बाबाजी के लिए ऐसा सूट बना दो।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार